रविवार

15 अक्टूबर 2023

केशव टाइम्स

डिजिटल संस्करण

आपकी आवाज

जातियों की संख्या के साथ की गई है छेड़छाड़: उपेंद्र कुशवाहा

2

प्रमुख खबरें : दिल्ली ■ पटना ■ बक्सर ■ शाहाबाद ■ मगध ■ सारण ■ मिथिलांचल ■ चंपारण ■ पूर्वांचल ■ लखनऊ

शारदीय नवरात्र

पहला रूप मां शैलपुत्री

शारदीय नवरात्रि का आज पहला दिन है। देवी के नौ रूपों की आराधना का आरंभ आज से हो गया है। हिंदू मान्यताओं में इन नौ दिनों में देवी मां की पूजा का विशेष महत्व होता है। पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा की जाती है। इस दिन घटस्थापन के बाद मां दुर्गा के प्रथम स्वरूप शैलपुत्री का पूजन, अर्चन और स्तवन किया जाता है। शैल का अर्थ है हिमालय और पर्वतराज हिमालय के यहां जन्म लेने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा जाता है। पार्वती के रूप में इन्हें भगवान शंकर की पत्नी के रूप में भी जाना जाता है। वृषभ (बैल) इनका वाहन होने के कारण इन्हें वृषभारूढा के नाम से भी जाना जाता है। इनके दाएं हाथ में त्रिशूल है और बाएं हाथ में इन्होंने कमल धारण किया हुआ है। नवरात्रि के पहला दिन मां शैलपुत्री का होता है। मां शैलपुत्री की अर्चना करने से सुख समृद्धी का वास होता है। मां शैलपुत्री की पूजा अभिजीत मुहूर्त में कर सकते हैं। अभिजीत मुहूर्त सुबह 11.28 से दोपहर 12.23 तक रहेगा।

मां शैलपुत्री की पूजा विधि

घटस्थापना के बाद मां शैलपुत्री की पूजा करें। देवी मां को अक्षत, सफेद फूल, धूप, दीप, फल और मिठाई अर्पित करें। पूजा के दौरान मंत्रों का उच्चारण करें और फिर माता शैलपुत्री की पूजा करें। पूजा के बाद पूरी श्रद्धा के साथ घी के दीपक से मां शैलपुत्री की आरती करें। पूजा समाप्त होने के बाद मां शैलपुत्री से प्रार्थना करें। देवी मां को दूध से बनी मिठाई का भोग लगाएं।

इन मंत्रों का करें जाप

ऊँ देवी शैलपुत्र्यै नमः॥
वन्दे वांछितलाभाय
चंद्रार्धकृतशेखराम्॥
वृषारूढ़ां शूलधरां शैलपुत्रीं
यशस्विनीम् ॥
शिवरूपा वृष वहिनी हिमकन्या
शुभंगिनी।
पद्म त्रिशूल हस्त धारिणी रत्नयुक्त
कल्याणकारीनी।।
या देवी सर्वभूतेषु माँ शैलपुत्री
रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमो नमः॥

विन्ध्याचल धाम पर स्पेशल कवरेज: देखें पेज चार पर

हम फिर जीते... विश्व कप में पाकिस्तान को लगातार 8वीं बार मिली हार

- अहमदाबाद में खेले गए इस हाईवोल्टेज मुकाबले में भारत ने पाक को 7 विकेट से हराया
- भारत ने 192 रनों का लक्ष्य 30.3 ओवर में हासिल किया

एजेंसी/अहमदाबाद

वर्ल्ड कप 2023 का 12वां मैच शनिवार को भारत और पाकिस्तान के बीच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला गया। इस हाईवोल्टेज मुकाबले में भारत ने पाकिस्तान को 7 विकेट से हरा दिया। भारत की विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ यह सबसे बड़ी जीत (विकेटों के लिहाज से) है। पाकिस्तान ने भारत को 192 रन का लक्ष्य दिया था, जिसे भारतीय बल्लेबाजों ने तीन विकेट खोकर 30.3 ओवर में ही हासिल कर लिया। रोहित शर्मा ने सबसे अधिक 86 रन की पारी खेली। वहीं श्रेयस अय्यर ने वर्ल्ड कप की पहली फिफ्टी लगाई। श्रेयस अय्यर 53 रन बनाकर नाबाद रहे। विराट और गिल ने 16-16 रन का योगदान दिया। केएल राहुल 19 रन बनाकर नाबाद रहे।

टीम इंडिया अंक तालिका में पहले स्थान पर: भारत ने इस जीत के साथ ही विश्व कप में पाकिस्तान को लगातार 8वीं बार हरा दिया। इस जीत के साथ ही टीम इंडिया अंक तालिका में पहले स्थान पर पहुंच गई है। भारत की यह इस विश्व कप में लगातार तीसरी जीत है। इससे पहले रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी थी। गेंदबाजों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, हार्दिक पंड्या, कुलदीप यादव, रविंद्र जडेजा ने 2-2 विकेट लिए। शार्दुल ठाकुर को कोई विकेट नहीं मिला। भारतीय टीम ने 18 साल बाद अहमदाबाद में पाकिस्तान के खिलाफ कोई वनडे मुकाबला खेला। पिछली बार 2005 में जब दोनों टीमों की यहां टक्कर हुई थी, तब पाकिस्तान ने भारत को हराया था।

पीएम मोदी ने टीम इंडिया को दी बधाई

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुंबई में 141वें अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति सत्र का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ जीत पर टीम इंडिया को बधाई दी। पीएम मोदी ने कहा कि 40 साल के अंतराल के बाद भारत में IOC सत्र आयोजित होना हमारे लिए बहुत गर्व की बात है। पीएम ने कहा, मैं टीम इंडिया और तमाम भारतीयों को पाकिस्तान के खिलाफ मिली इस ऐतिहासिक जीत के लिए बधाई देता हूं। भारत ने बहुत शानदार जीत हासिल की है। स्पोर्ट्स भारत की संस्कृति का एक अहम हिस्सा रहा है। उन्होंने कहा, भारत अपने देश में ओलंपिक के आयोजन के लिए उत्साहित है। 2036 में ओलंपिक के सफल आयोजन की तैयारी में भारत अपने प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ेगा, ये 140 करोड़ भारतीयों का बरसों पुराना सपना है।

उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं के लिए सम्मान समारोह आयोजित

हर क्षेत्र में संभावनाएं, समय से उन्हें चुनने की है जरूरत: योगी

- सीएम योगी ने मिशन शक्ति के तहत लोकभवन में आयोजित महिला सम्मान कार्यक्रम में देश की तीन विभूतियों को किया सम्मानित
- सीएम बोले, सब कुछ हो सकता है, बस एक सतत प्रयास की आवश्यकता

केटी न्यूज ब्यूरो/लखनऊ

भारतीय परंपरा में देवी के नौ स्वरूपों में से तीन महत्वपूर्ण पक्षों को लेकर आराधना होती है। इनमें एक देवी का पक्ष सत्य, दूसरा पक्ष ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी के रूप में होता है, जबकि तीसरा पक्ष खुशहाली और ऐश्वर्य के रूप में होता है। आज कार्यक्रम में तीनों देवियों के प्रतीक के रूप में नवरात्रि के एक दिन पहले विशिष्ट अतिथियों पद्मश्री हेमा प्रभा सोतिया, इसरो वैज्ञानिक ऋतु करिधल श्रीवास्तव और एचसीएल की चेयरपर्सन रोशनी नाडर मल्होत्रा को सम्मानित करने का अवसर मिला। वह महिला सशक्तिकरण के रूप में कार्यक्रम में मौजूद हैं। साथ ही इस बात का प्रतीक हैं कि सब कुछ हो सकता है, बस एक सतत प्रयास की आवश्यकता है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को लोकभवन में आयोजित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं के सम्मान कार्यक्रम में कहीं। इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंचासीन तीनों विशिष्ट महिला अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

मिशन शक्ति से महिला संबंधी अपराधों में आई काफी गिरावट: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि लखनऊ की बेटी इसरो वैज्ञानिक करिधल श्रीवास्तव का कार्यक्रम में उपस्थित रहना बेटियों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उनकी सफलता यह बताती है कि कुछ भी असंभव नहीं है। केवल प्रयास की आवश्यकता है, इसके बाद सफलता आपके पीछे-पीछे घूमती है।

सीएम ने कहा कि उत्तर को दक्षिण से जोड़ने का काम कर रहीं पद्मश्री हेमा प्रभा सोफिया ने अपना उद्बोधन भले ही असमिया में दिया हो, लेकिन उनके सारे भाव हर व्यक्ति समझ रहा था। एचसीएल की चेयरपर्सन रोशनी नादर मल्होत्रा ने सामाजिक कार्यों संग अपने सामर्थ्य से उद्योग को नई ऊचाईयां देकर एक नई कहानी लिखी है। उनकी यह सफलता दशार्ता है कि हर क्षेत्र में संभावनाएं हैं, केवल उन संभावनाओं को समय से चुनने और फिर उस पर सरपट दौड़ने की आवश्यकता है। हमारी सरकार ने वर्ष 2020 में नारी सम्मान, सुरक्षा और स्वावलंबन को लेकर मिशन शक्ति की शुरूआत की थी, लेकिन इससे पहले ही उत्तर प्रदेश पुलिस में महिला कर्मियों की 20 प्रतिशत भर्ती को सुनिश्चित किया गया था। वर्ष 1947 से लेकर के 2017 तक यूपी पुलिस में महिला कार्मिक दस हजार के आसपास थी, लेकिन यह संख्या आज बढ़कर 40 हजार हो गयी है। इतना ही नहीं उन्हे फील्ड का काम सौंपा जा रहा है, जिसकी वह बखूबी जिम्मेदारी निभा रहीं हैं। मिशन शक्ति का ही परिणाम है कि एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में महिला संबंधी अपराधों में काफी गिरावट आई है। साथ ही ऐसे अपराधियों को सर्वाधिक सजा दिलाने वाला राज्य भी उत्तर प्रदेश बन गया है।

महिला सशक्तिकरण रैली से मिशन शक्ति के चौथे चरण का आगाज

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को अपने सरकारी आवास से नारी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को समर्पित मिशन शक्ति के चौथे चरण का आगाज महिला सशक्तिकरण रैली को रवाना कर किया। रैली के जरिये केंद्र और राज्य सरकार की ओर से महिलाओं-बेटियों के कल्याण के लिए संचालित योजनाओं से रूबरू कराया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में वर्ष 2020 में महिला संबंधी अपराधों को नियंत्रित करने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसकी थीम थी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन। उन्होंने कहा कि सरकार विभिन्न तरह के कार्यक्रम चलाती है, लेकिन जिनके लिए कार्यक्रम चलाया जा रहा है उन्हे इसकी जानकारी ही नहीं हो पाती। इसकी वजह से वह इसका लाभ नहीं उठा पाते। ऐसे में प्रदेश के सभी 75 जिलों के लिए जागरुकता रैली का शुभारंभ किया गया है। इसके बाद प्रदेश के हर जनपद के स्कूल, कॉलेज में प्रभात रैलियां निकाल जाएंगी। इसके अलावा उन जनपदों में महिला सुरक्षा, सम्मान, स्वावलंबन को लेकर अच्छा काम करने वालों को सम्मानित किया जाएगा।

नकली पासपोर्ट घोटाला मामले में सीबीआई की 50 ठिकानों पर रेड

नई दिल्ली। नकली पासपोर्ट घोटाला मामले में शनिवार को सीबीआई ने कोलकाता, सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग और गंगटोक में 50 से अधिक ठिकानों पर छापेमारी की। इसमें सीबीआई ने गंगटोक पासपोर्ट सेवा केंद्र के एक वरिष्ठ अधीक्षक गौतम कुमार और एक होटल एजेंट को उनके कब्जे में 1,90,000 रुपये के साथ गिरफ्तार किया। ये लोग बिचौलियों के लिए जाली और फर्जी दस्तावेजों के साथ अवैध रूप से पासपोर्ट जारी कर रहे थे। अधिकारियों ने 24 व्यक्तियों के खिलाफ भी मामला दर्ज किया। अधिकारियों ने बताया कि एफआईआर में 16 अधिकारियों सहित 24 व्यक्तियों के नाम हैं, जो कथित तौर पर रिश्वत के बदले गैर-निवासियों सहित अयोग्य व्यक्तियों को जाली दस्तावेजों के आधार पर पासपोर्ट जारी कर रहे थे।

घोषणा... 23 अगस्त को मनाया जाएगा राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस

एजेंसी/नई दिल्ली

भारत सरकार ने 23 अगस्त को 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की है। इस संबंध में सरकार ने शनिवार को नोटिफिकेशन जारी किया है। इसमें कहा गया है कि 23 अगस्त 2023 को विक्रम लैंडर की लैंडिंग और प्रज्ञान रोवर की तैनाती के साथ मिशन की सफलता की याद में देशभर में हर साल 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया जाएगा।

अधिसूचना में सरकार ने कहा कि 23 अगस्त स्पेस मिशन में देश की प्रगति में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह युवा पीढ़ी की साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथ की रुचि बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है और स्पेस सेक्टर को एक प्रमुख प्रोत्साहन प्रदान करता है। इस ऐतिहासिक मिशन के परिणाम से आने वाले सालों में मानव जाति का काफी फायदा होगा।

गौरतलब है कि 23 अगस्त को जब इंडियन स्पेस रिसर्च ओर्गनाइजेशन का चंद्र मिशन पूरा हुआ था तो पूरे देश में जश्न मनाया गया था। चंद्रयान की सफल लैंडिंग के साथ ही भारत अमेरिका, रूस, और चीन के बाद चांद पर पहुंचने वाला दुनिया का चौथा देश बन गया था, जबकि चांद के साउथ पोल पर पहुंचने वाला भारत पहला देश है। इसरो की इस सफलता पर मोदी कैबिनेट ने इस साल अगस्त महीने में 23 अगस्त के दिन को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी।

बेटियों की सुरक्षा के साथ ही उनकी समृद्धि के लिए भी तत्पर है योगी सरकार

बेटियों से जुड़ी योजनाओं को गति देने के लिए चलेगा अभियान

- बाल अधिकार सप्ताह, शक्ति संवाद, स्वावलंबन कैंप, मिशन कार्यशालाओं का होगा आयोजन
- बालिका गृहों में आयोजित किये जाएंगे 'दुर्गा शक्ति मेगा सेफ्टी वर्कशॉप'

केटी न्यूज ब्यूरो/लखनऊ

नारी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन के लिए योगी सरकार का मिशन शक्ति अभियान अपने चौथे चरण में पहुंच गया है। इसके साथ ही प्रदेश सरकार अब बेटियों से संबंधित योजनाओं को और तेज गति देने के लिए महा अभियान शुरू करने जा रही है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से प्रदेश में आगामी दिनों में तमाम मेगा इवेंट और अन्य आयोजनों के साथ महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाएगा। मुख्यमंत्री की मंशा है कि प्रदेश में महिलाएं खुद को ना केवल सुरक्षित महसूस करें बल्कि उन्हें उनके अधिकारों और सरकार की ओर से उनके लिए चलाई जा रही सभी योजनाओं की जानकारी भी हो, जिससे वे योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठा सकें।

मुख्यमंत्री योगी आदितयनाथ के निर्देश पर महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से जहां 16 से 22 अक्टूबर तक जागरूकता सप्ताह का आयोजन होगा, वहीं 14 से 20 नवंबर तक महिला एवं बाल अधिकारों पर विभिन्न गतिविधियां जैसे नुक्कड़ नाटक और खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा शक्ति संवाद, के जरिए कन्या सुमंगला योजना व मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के लाभार्थियों के साथ प्रदेश के सभी जिलाधिकारी अपने अपने जिले में संवाद करेंगे। इसके अलावा प्रदेश में बच्चों खासकर बालिकाओं से संबंधित योजनाओं को गति देने तथा प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जिलाधिकारियों की अध्यक्षता में मिशन वात्सल्य की कार्यशालाओं का भी आयोजन होगा।

16 से 22 अक्टूबर के मध्य चलेगा जागरूकता सप्ताह

मुख्यमंत्री के निर्देश पर प्रदेश के सभी जनपदों में महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से विभागीय योजनाओं के प्रति जागरूकता के साथ ही बड़े पैमाने पर आवेदन भी कराया जाएगा। इसमें मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना और मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना की जानकारी दी जाएगी। इसी प्रकर पति की मृत्यु के बाद निराश्रित महिलाओं को पेंशन आदि के प्रति जागरूक करने के लिए भी प्रदेश के सभी जिलों में वृहद स्तर पर कैंप लगाए जाएंगे। वहीं अडॉप्शन वीक सेलिब्रेशन के जरिए प्रदेश में बच्चों विशेषकर बालिकाओं को दत्तकग्रहण के माध्यम से पुर्नवासित करने के लिए 16 से 22 अक्टूबर के मध्य जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जाएगा।

हिंसा से पीड़ित महिलाओं के साथ संवाद करेंगे डीएम

इन सबके साथ ही प्रदेश में 'हक की बात, जिलाधिकारी के साथ' नाम से मेगा इवेंट भी आयोजित किया जाएगा। इसमें प्रदेश के सभी जनपदों के डीएम हिंसा से पीड़ित महिलाओं के साथ संवाद करेंगे। इसी प्रकार शक्ति कार्यशालाओं का भी आयोजन योगी सरकार कराएगी। इसमें कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम 2013 के अंतर्गत गठित स्थानीय व आंतरिक परिवाद समितियों का ओरिएंटेशन भी होगा।

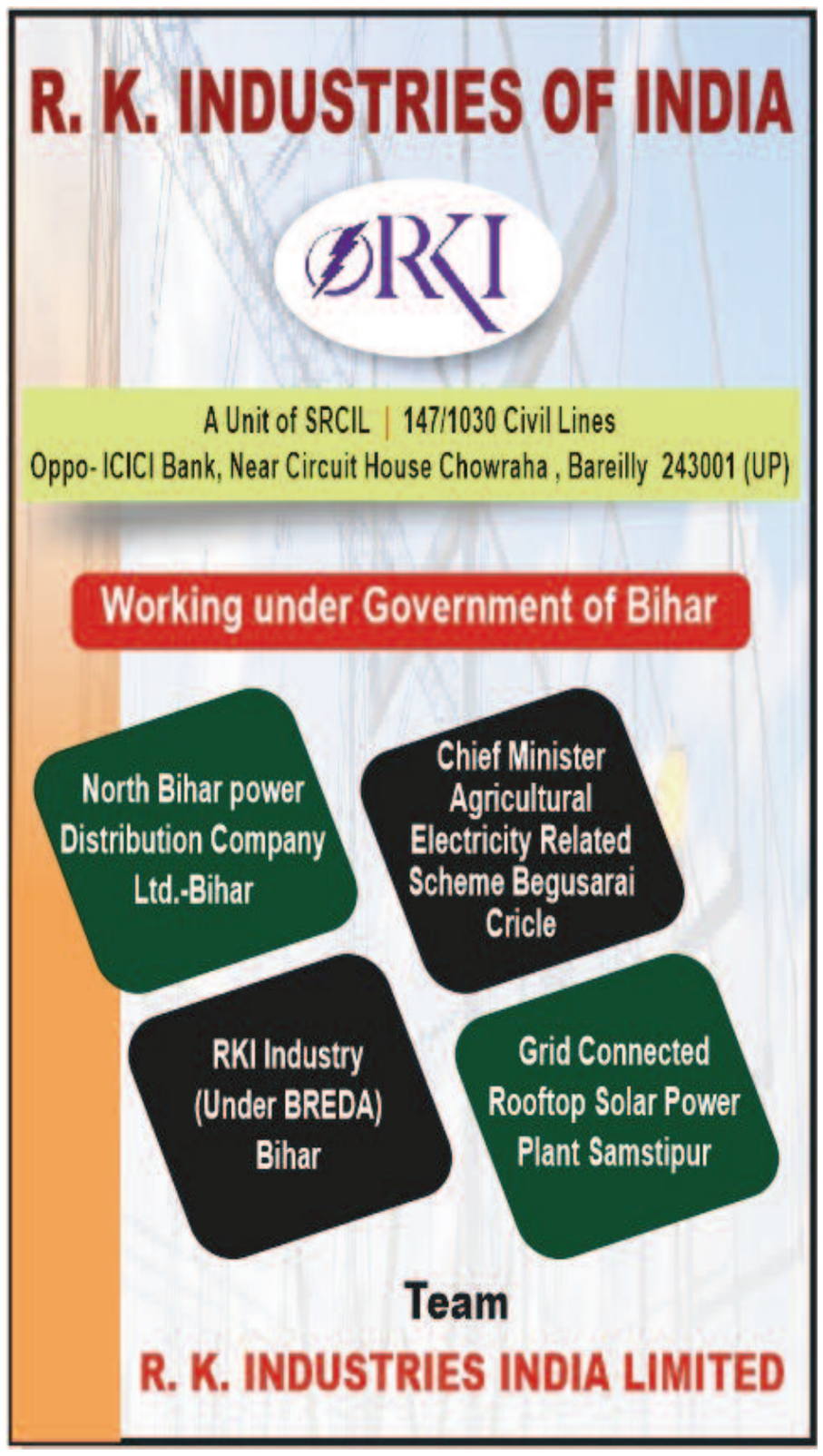

सर्वे रिपोर्ट के खिलाफ सड़क पर उतरे रालोजद प्रमुख उपेंद्र कुशवाहा, लगाए आरोप

जातियों की संख्या के साथ की गई है छेड़छाड़

- अपने समर्थकों के साथ राजभवन मार्च के लिए निकले उपेंद्र कुशवाहा को पुलिस ने डाक बंगला चौराहे पर रोका
- अपने समर्थकों के साथ चौराहे पर ही बैठ कुशवाहा ने महागठबंधन सरकार के विरोध में की नारेबाजी

केटी न्यूज/पटना

राष्ट्रीय लोक जनता दल प्रमुख उपेन्द्र कुशवाहा ने शनिवार को जाति जनगणना के आंकड़ों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। वह अपने समर्थकों के साथ राजभवन मार्च के लिए गांधी मैदान से निकले लेकिन उन सब को पटना पुलिस ने डाक बंगला चौराहा पर रोक दिया। पटना पुलिस ने विधि व्यवस्था का हवाला देते हुए उपेंद्र कुशवाहा के काफिले को डाक बंगला चौराहे से आगे नहीं बढ़ने दिया। उसके बाद उपेंद्र कुशवाहा अपने समर्थकों और वरीय नेताओं के साथ बीच चौराहे पर ही बैठ गए और महागठबंधन सरकार के विरोध में नारेबाजी करने लगे। उपेन्द्र कुशवाहा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का

विरोध करते हुए कहा कि जातीय गणना में सभी जाति का आंकड़ा जानबूझकर गलत बताया गया है। चुनावी लाभ पाने के लिए नीतीश कुमार ने कुशवाहा समाज समेत कई जातियों का गलत आंकड़ा पेश किया है। जातियों की संख्या के साथ छेड़खानी की गई है। उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर आरोप लगाते हुए कहा कि सर्वे टीम ने घर में ही बैठकर जाति जनगणना का आंकड़ा पेश किया है, इसलिए हमारी मांग है कि फिर से सर्वे कराया जाए और जातीय गणना के आंकड़े को सही ढंग से पेश किया जाए।

मेरा दावा है... आंकड़ा गलत

उपेन्द्र कुशवाहा ने कहा कि मेरा दावा है कि आंकड़ा गलत है। उन्होंने कहा कि किसी से पूछ कर संपत्ति का आंकड़ा कैसे जुटाया जा सकता है। परिवार में कितने सदस्य हैं यह बात गांव का लोग बता देगा। कोई परिवार किस जाति का है यह भी गांव वाला बता देगा लेकिन उनकी कितनी संपत्ति है? उसके कहां-कहां क्या क्या व्यवसाय और कहां-कहां उसके अन्य घर मकान हैं। यह कोई दूसरा व्यक्ति कैसे बता सकता है? और जब इस तरह का आंकड़ा नहीं जुटाया ही नहीं गया तो यह आंकड़ा सही कैसे हो गया।

महामहिम इसमें हस्तक्षेप करें

उपेन्द्र कुशवाहा ने कहा कि जाति जनगणना का जो आंकड़ा प्रकाशित किया गया है वह घर में बैठकर बना लिया गया है। इसको लेकर हर जगह से शिकायत मिल रही है कि उनके गांव में कोई गया ही नहीं। उनके यहां जाकर किसी ने कुछ पूछा ही नहीं। ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट है कि घर में बैठकर आंकड़ा बनाया गया जो कहीं से दुरुस्त नहीं हो सकता है। उपेन्द्र कुशवाहा ने कहा कि यह सिर्फ जातीय गिनती का सवाल नहीं है आर्थिक सर्वे करने की भी बात कही जा रही है। लेकिन असल में आर्थिक सर्वे तो और भी मुश्किल है। परिवार के सदस्यों की गिनती कोई भी बता देगा लेकिन किसके कितने बैंक खाते हैं और किन खातों में कितना रुपया है यह कोई भी कैसे बता देगा। गांव से बाहर किसकी कितनी संपत्ति है यह कौन बताएगा। यह आंकड़ा तो वही बताया जिसकी संपत्ति है। और जब ऐसा कोई सर्वे हुआ ही नहीं तो फिर कैसे इनका आंकड़ा सही हो जाएगा। इसी की सुधार के लिए राज्य सरकार से हमारी मांग है कि सरकार पर ध्यान दे। हम महामहिम राज्यपाल महोदय से जाकर मिलेंगे और कहेंगे कि आप इसमें हस्तक्षेप कीजिए।

सवेरा कैंसर अस्पताल में विकिरण विभाग का कल सीएम करेंगे उद्घाटन

केटी न्यूज/पटना

बिहार के सबसे बड़े कैंसर अस्पताल सवेरा कैंसर हॉस्पिटल में अब कैंसर इलाज के लिये रेडिएशन ऑनकोलॉजी की सेवाएं शुरू हो चुकी हैं। इसका विधिवत उद्घाटन प्रदेश के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 16 अक्टूबर को करेंगे। उक्त जानकारी देश के प्रसिद्ध कैंसर विशेषज्ञ व सवेरा कैंसर हॉस्पिटल के एमडी डॉ वीपी सिंह ने दी।

अस्पताल परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री के कार्यक्रम की पूरी जानकारी दी। डॉ वीपी सिंह ने कैंसर के बारे में कहा कि इस रोग का इलाज मूलतः तीन विधियों मेडिकल ऑकोलोजी, सर्जिकल ओंकोलॉजी और रेडिएशन ओंकोलॉजी द्वारा किया जाता है। अब पटना के सवेरा कैंसर अस्पताल में रेडिएशन की सुविधा भी उपलब्ध हो गई है, जिससे कैंसर रोग संबंधित किसी प्रकार के इलाज के लिए मरीजों को एक ही छत के नीचे अत्याधुनिक से अत्याधुनिक सुविधा का लाभ मिलेगा। उन्होंने आगे कहा कि वाइटल बीम (वर्जन -3) रेडिएशन तकनीक की अत्याधुनिक मशीन है, जो अधिकतम प्रकार के कैंसरों के इलाज के लिए सक्षम है। यह मशीन वेरियन कंपनी की है, जो इस क्षेत्र की अग्रणी कंपनियों में आती है। इस मशीन के द्वारा, 3DCRT, IMRT, IGRT, SBRT जैसी कई प्रकार की तकनीकों से इलाज संभव है और यह पूरे बिहार में सिर्फ सवेरा कैंसर हॉस्पिटल में उपलब्ध है। कैंसर की बीमारी में शुरुआती लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करने की सलाह दी जाती है खासकर स्तन कैंसर के मामले में महिलाओं को शरीर के गांठों के प्रति सजग रहते हुए साल में कमसे कम एक बार सम्पूर्ण स्क्रीनिंग करनी चाहिए। विशेषज्ञों का मानना है कि मेमोग्राफ के द्वारा स्तन कैंसर को शुरूआती दिनों में ही डिटेक्ट किये जा सकने में मदद मिल सकती है।

पशुपति पारस बोले- चिराग अगर मां को हाजीपुर से लड़ाएगा तो हम उसकी बहन को देंगे टिकट

केटी न्यूज/पटना

अगर चिराग अपनी मां को हाजीपुर से चुनाव लड़ाएगा तो हम भी रामबिलास पासवान की पहली पत्नी और बेटी को जमुई से (बहन और मां) को चुनाव लड़ा देंगे। हाजीपुर सीट से 2024 के चुनाव में अगर उनकी मां लड़ती हैं तो राह आसान हो जाएगी। यह बातें जमुई सांसद चिराग पासवान और उनके चाचा सह केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस ने कही है। दरअसल, पशुपति कुमार पारस अपने संसदीय क्षेत्र हाजीपुर पहुंचे थे। जहां मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने बड़ा बयान दिया। पारस ने कहा कि चिराग पासवान एनडीए में हैं तो बात मानें नहीं तो बिहार की 40 लोकसभा सीटों पर लड़ें। इस दौरान जब उनसे सवाल पूछा गया है कि अगर आपके भतीजे चिराग अपनी मां को हाजीपुर से चुनाव लड़ाएंगे तो इसके जवाब में पारस ने कहा कि - ₹एक बात जान लीजिए कि कोई टक्कर नहीं होने वाली है। एनडीए के हम स्थायी सदस्य हैं। कल वो आदमी एनडीए में रहेगा या नहीं रहेगा इसकी भी गारंटी नहीं है। मैं हाजीपुर से लडूंगा दर्जनों बार कह चुका हूं। इसके बाद जिसको जहां से लड़ना है, ताकत आजमाइश करना है कर ले।

पशुपति कुमार पारस ने कहा कि सब कोई स्वतंत्र है। जब तुम हाजीपुर से अपनी मां को लड़वा सकते हो तो हम भी जमुई से किसी को लड़वा सकते हैं। उसी (चिराग पासवान) के परिवार से किसी को लड़वा देंगे। इससे पहले बीते पटना में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में चिराग ने कहा था कि समय आने पर उनके चाचा पशुपति पारस हट जाएंगे। लेकिन अब एक बार फिर पशुपति पारस के बयान से ऐसा लग रहा है कि चाचा-भतीजा में टक्कर जारी है।

लालू-नीतीश के संरक्षण में अपनी ताकत बढ़ा रहा पीएफआई: गिरिराज

केटी न्यूज/पटना

बिहार सरकार द्वारा हिंदुओं के साथ भेदभाव करने के सवाल पर शनिवार को बीजेपी नेताओं ने राजभवन पहुंचकर राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर से मुलाकात कर आपत्ति दर्ज कराई। बेगूसराय सांसद और केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह और सांसद रामकृपाल यादव समेत अन्य नेताओं ने बिहार सरकार पर तुष्टिकरण की नीति अपनाने का आरोप लगाया है। राज्यपाल से मुलाकात के बाद गिरिराज सिंह ने बिहार सरकार पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा है कि बिहार की सरकार हिंदुओं के साथ भेदभाव कर रही है। बेगूसराय में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने शिवलिंग को तोड़ा और चार दर्जन हिंदुओं का फंसाकर जेल भेज दिया गया।

उन्होंने कहा कि पीएफआई पर भले ही बैन लग गया हो लेकिन लालू और नीतीश कुमार के संरक्षण में पीएफआई हर जिले में अपनी ताकत बढ़ा रहा है। बिहार में कट्टरपंथी और तुगलकी सरकार चल रही है। सराकर का एक ही मकसद है मुसलमानों को वोट लो और हिंदुओं को जाति में बांट दो। गिरिराज ने हिंदू समाज के लोगों से अपील की है कि वे एकजुट होकर अपनी रक्षा के लिए खुद आवाज उठाएं।

मधेपुरा में महादलित लड़की के साथ गैंगरेप

- पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को किया गिरफ्तार, दो अब भी फरार

केटी न्यूज/पटना

मधेपुरा में एक महादलित लड़की के साथ गैंगरेप की सनसनीखेज वारदात सामने आई है। यहां चार लड़के पीड़ित लड़की को जबरन उठाकर अपने साथ ले गए और सुनसान जगह पर बारी बारी से दुष्कर्म किया। इस मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है जबकि दो फरार बताए जा रहे हैं। घटना मुरलीगंज थाना क्षेत्र के एक गांव की है। बताया जा रहा है कि पीड़ित महादलित लड़की किसी काम से घर से बाहर निकली थी। इसी दौरान बीच रास्ते में चार मनचलों ने उसका रास्ता रोक दिया और जबरन बाइक पर बैठाकर सुनसान जगह पर ले गए। जहां चारो ने बारी बारी से उसे अपनी हवस का शिकार बनाया। वारदात को अंजाम देने के बाद चारों लड़के मौके से फरार हो गए। किसी तरह से लड़की अपने घर पहुंची और परिजनों को घटना की जानकारी दी।

पीड़िता के बयान पर मधेपुरा महिला थाना में चार लड़कों के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज किया है। केस दर्ज होने के बाद पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो लड़कों को गिरफ्तार कर लिया है जबकि दो अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है। पुलिस ने पीड़ित लड़की को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है और मामले के छानबीन में जुट गई है।

पूरे मामले पर मधेपुरा एसडीपीओ प्रवेंद्र भारती ने बताया कि लड़की के साथ गांव के ही कुछ लड़कों द्वारा गलत काम करने की सूचना मिली है। पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल करवाया है और इस घटना में शामिल दो नामजद अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। वारदात में शामिल अन्य अभियुक्तों को भी जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

GYAN JYOTI PUBLIC SCHOOL
RUPSAGAR
Affiliated to CBSE NEW Delhi (10+2)
Rupsager, Main Road, Nawangar Buxar (Bihar)
Cantact No - 6200727438, 7004289776, 7654245005 | Email - gips2011@ Yahoo.in, gyanjyotipublicschool.in

विद्यालय में छात्रों के लिए अत्याधुनिक सुविधा

- असम, बंगाल व दार्जिलिंग के कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षक
- स्मार्ट क्लासेज आडियो एवं वीडियो से कक्षाओं का संचालन
- अत्याधुनिक विज्ञान व कंप्यूटर की प्रयोगशालाएं
- सुव्यवस्थित पुस्तकालय
- खेलकूद, योग, नैतिक शिक्षा व शारीरिक शिक्षा का कुशल ट्रेनर द्वारा प्रशिक्षण
- बच्चों की सुरक्षा के लिए प्रत्येक क्लास सीसीटीवी कैमरे से लैस
- बच्चों के लिए हैप्पीनेस क्लासेज
- कराटे व स्काउट एंडगाइड का कुशल ट्रेनर द्वारा प्रशिक्षण

शारदीय नवरात्र आज से, कलश स्थापना के साथ शुरू होगा नौ दिनी अनुष्ठान

- हाथी पर हो रहा मां का आगमन, मुर्गे पर होगी विदाई
- आगमन शुभ फलदायी जबकि विदाई का वाहन मुर्गा प्राकृतिक आपदाओं का प्रतीक

केटी न्यूज/डुमरांव

आदि शक्ति मां देवी की आराधना का अनुष्ठान शारदीय नवरात्र के रूप में 15 अक्टूबर रविवार से शुरू होगा। नौ दिन मां विभिन्न रूपों में विराजमान होकर श्रद्धालुओं को दर्शन देंगी। नवरात्र में होने वाले अनुष्ठान को लेकर तैयारी शुरू हो गयी है। विभिन्न देवी मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना के साथ शुभ मुहूर्त में कलश स्थापना होंगे और वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजा-अर्चना की जायेगी। नवरात्र के ये पावन दिन शुभ कार्यों के लिए बेहद ही उत्तम माने जाते है। इन दिनों कई शुभ कार्य किये जाते है। शास्त्रों के अनुसार नवरात्र की नौ तिथियां ऐसी होती हैं, जिसमें बिना मुहूर्त देखे कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है। रविवार से मां आदिशक्ति की उपासना का ये पावन पर्व आरंभ होगा। नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्रि की शुरूआत कलश स्थापना के साथ होती है। नवरात्र में कलश स्थापना का विशेष महत्व है। नवरात्र पूजन में कलश स्थापना से ही नवरात्रि का आरंभ माना जाता है। आचार्य प्रभुनारायण पांडेय ने बताया कि कलश स्थापना को घटस्थापना भी कहते है। धार्मिक मान्यता के अनुसार कलश को भगवान विष्णु का रूप माना जाता है इसलिए नवरात्र पूजा से पहले घटस्थापना या कलश की स्थापना करने का विधान है। शास्त्रों के अनुसार कलश विश्व ब्रह्मांड का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि संपूर्ण देवता ब्रह्मांड में एकसाथ विराजित है। नवरात्रि पूजन में कलश इस बात का सूचक है कि कलश के माध्यम से समस्त देवताओं का पूजा में आह्वान करें और उन्हें नवरात्रि पूजन में शामिल करें। कलश स्थापना करने से पहले उस स्थान को गंगा जल से शुद्ध कर लें। इसके बाद वहां हल्दी से अष्टदल बनाएं। इसके बाद कलश में शुद्ध जल लेकर उसमें हल्दी, अक्षत, लौंग, सिक्का, इलायची, पान और फूल डालें फिर कलश के ऊपर रोली से स्वास्तिक बनाएं अब कलश को स्थापित करते हुए मां भगवती का आह्वान करें।

अलग-अलग सवारियों पर होता है माता का आगमन-प्रस्थान

मां दुर्गा का वाहन शेर है लेकिन हर बार नवरात्रि पर मां दुर्गा का आगमन और प्रस्थान अलग-अलग सवारियों पर होता है। मातारानी के आगमन-प्रस्थान की सवारी नवरात्रि के प्रारंभ होने और समाप्त होने के दिन पर निर्भर करती है। यदि शारदीय नवरात्रि रविवार या सोमवार से शुरू हों तो मां दुर्गा का आगमन हाथी पर होता है। धर्म-शास्त्रों में मां दुर्गा के आगमन की सवारी हाथी को अति शुभ माना गया है। इसे खेती के लिए इसे अच्छा माना जाता है। साथ ही नवरात्रि व्रत करने वाले को धन-समृद्धि प्राप्त होती है। वहीं धर्म-शास्त्रों के अनुसार जब नवरात्रि शनिवार या मंगलवार के दिन समाप्त हों तो मां दुर्गा का प्रस्थान मुर्गे पर होता है। इस साल शारदीय नवरात्रि मंगलवार को समाप्त होंगी, लिहाजा माता रानी की प्रस्थान की सवारी मुर्गा होगा। दुर्गा सप्तशती के वर्णन के अनुसार देवी दुर्गा की विदाई का वाहन मुर्गा प्राकृतिक आपदाओं का प्रतीक है।

कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त

शारदीय नवरात्रि की शुरूआत 15 अक्टूबर रविवार के दिन से हो रही है.। ऐसे में कलश स्थापना का शुभ मुहूर्त सुबह 06 बजकर 21 मिनट से सुबह 10 बजकर 12 मिनट तक रहेगा। वहीं, कलश स्थापना का अभिजीत मुहूर्त सुबह 11 बजकर 44 मिनट से 12.30 मिनट तक रहने वाला है। इस मुहुर्त में कलश स्थापना विशेष फलदायी माना जाता है।

एसपी ने चोरी गए 52 मोबाइल फोन को पीड़ितों को किया वापस

केटी न्यूज/बक्सर

बक्सर एसपी मनीष कुमार ने शनिवार को विभिन्न मामलों में चोरी या खोए हुए 52 मोबाईल फोन को उनके धारकों को लौटाया। एसपी कार्यालय में शिविर लगा लोगों को उनका मोबाईल बांटा गया। बता दें कि ऑपरेशन मुस्कान के अभियान चला पुलिस द्वारा चोरी गए मोबाईलों को बरामद कर लौटाने का यह काम हर महीने किया जा रहा है। इस दौरान 52 पीड़ितों को उनके मोबाईल को लौटाया गया जिसके बाद उनके चेहरे पर मुस्कान झलक रही थी।

इस सम्बन्ध में एसपी मनीष कुमार ने बतया कि लगभग हर माह ऑपरेशन मुस्कान के तहत लोगों द्वारा थाने में दर्ज कराए गए सनहा के आधार पर डीआईयू की टीम लगातार रिकवर कर रही है। इसी क्रम में शनिवार को चौदहवें राउंड के दौरान 52 मोबाईल धारकों को उनका फोन वापस किया गया, जिसके बाद सभी मोबाईल धारक काफी खुश नजर आ रहे थे। वही एसपी ने बताया कि अबतक जिला की डीआईयू टीम ने 1252 लोगों को मोबाईल लौटा चुकी है। आगे उन्होंने जिलेवासियों से अपील किया कि आपकी मोबाईल चोरी या गुम हो जाता है तो थाने को जरूर सुचना दें ताकि आपकी चेहरे पर हमारी पुलिस मुस्कान लौटा सकें।

खबरें फटाफट

छत से गिर महिला की मौत, परिजनों में छाया मातम

डुमरांव। नया भोजपुर ओपी थाना क्षेत्र के स्थानीय गांव के कुरैशी मोहल्ले में छत से गिर एक अधेड़ महिला की मौके पर ही मौत हो गई। घटना शनिवार शाम 3 बजे की है। मृतका की पहचान कुरैशी मोहल्ले के स्व अशरफ अली की 60 वर्षीय पत्नी हसबुन खातून के रूप में हुई है। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार वह शाम तीन बजे किसी काम से छत पर गई थी। इसी दौरान अचानक संतुलन बिगड़ने से वह छत से गली में गिर गई तथा घटना स्थल पर ही उसकी मौत हो गई। हलांकि परिजन उसे आनन फानन में लेकर अस्पताल गए, जहां डाक्टरों ने उसके मौत की पुष्टि कर दी। इसकी जानकारी मिलते ही नया भोजपुर ओपी प्रभारी मुकेश कुमार ने शव को कब्जे में ले पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल बक्सर भेजा है। इस घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया है।

ट्रैक्टर ने ट्रक में मारी टक्कर, ट्रैक्कर चालक जख्मी

बक्सर। शनिवार को कृष्णाब्रह्म थाना क्षेत्र के एनएच 922 पर कुटी डेरा गांव के समीप अपने लेन में जा रही डीसीएम में रांग साइड से तेज गति से जा रही ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी। इस घटना में ट्रैक्टर चालक आंशिक रूप से जख्मी हो गया। वहीं दुर्घटना के बाद देर तक उस लेन में परिचालन बाधित रहा। इसकी जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों गाड़ियों को अपने कब्जे में ले लिया है। प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो दोपहर में टैक्टर अकालूपुर से ईंट लादकर नुआंव गांव जाने के लिए एनएच 922 से रंग साइड से तेजी से जा रही थी कि अपने लेन में सामने से आ रही डीसीएम को टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में ट्रैक्टर चालक अकालूपुर गांव निवासी लालू यादव को हल्की चोट आई है। जिनका इलाज स्थानीय बाजार स्थित निजी अस्पताल में कराने के घर भेज दिया गया। डीसीएम पटना से हरियाणा जा रही थी। जिस पर पार्सल का सामान लदा हुआ था। समाचार लिखे जाने तक इस मामले में किसी पक्ष द्वारा एफआईआर दर्ज नहीं कराया गया था।

पुराना भोजपुर में बाइक दुर्घटना में तीन युवक जख्मी

डुमरांव। शनिवार को पुराना भोजपुर के पास एनएच 922 पर हुए एक सड़क दुर्घटना में तीन युवक जख्मी हो गए। स्थानीय लोगों ने जख्मियों को तत्काल किसी निजी अस्पताल में पहुंचाया है। जानकारी के अनुसार तीनों रोहतास जिले के सूर्यपुरा गांव के रहने वाले है। समाचार लिखे जाने तक जख्मी युवकों की पहचान नहीं हो सकी है। स्थानीय पुलिस को भी घटना की जानकारी नहीं मिली है। नया भोजपुर ओपी प्रभारी ने इस घटना से अनभिज्ञता जताई है।

समीक्षा बैठक: डीएम व एसपी ने भूमि विवाद का निपटारा तेजी से करने का दिया निर्देश

जनता दरबार में उपस्थित होकर मामलों का निष्पादन कराएं सीओ-आरओ: डीएम

केटी न्यूज/बक्सर

शनिवार को समाहरणालय परिसर स्थित सभागार में डीएम एसपी ने बैठक कर कई विभागों के कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान डीएम एसपी का मुख्य फोकस भूमि विवाद के मामलों के शीघ्र निष्पादन पर रहा। डीएम ने शनिवार को थानों में आयोजित जनता दरबार को गंभीरता से लेने को कहा। उन्होंने कहा कि सभी अंचल अधिकारी यानी सीओ व राजस्व अधिकारी यानी आरओ अपने-अपने थाना में प्रत्येक शनिवार को उपस्थित हो भूमि विवाद संबंधित मामलों का निष्पादन कराएं। वही एसपी मनीष कुमार ने थानाध्यक्षों को इसमें सहयोग करने को कहा।

मद्य निषेध के समीक्षा के क्रम में उत्पाद अधीक्षक ने कहा कि पिछले 15 से 20 दिनों के अंदर नियमित जांच व छापेमारी के दौरान लगभग 4 से 5 करोड़ रुपए मूल्य की शराब पकड़ी गई है। उत्पाद अधीक्षक ने इस शराब के रख रखाव में आ रही परेशानियों का हवाला दे इसे विनष्ट करने की इजाजत देने की मांग की। जिस पर डीएम ने नियमानुसार विनष्ट करने का निर्देश दिया। बैठक में लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम की समीक्षा की गई और संबंधित पदाधिकारियों को नियमित रूप से सुनवाई में उपस्थित रहते हुए निर्धारित समयावधि में मामलों का निष्पादन करने को कहा गया। मापी अतिक्रमण के लंबित आवेदनों के शीघ्र निष्पादन का निर्देश डीएम ने दिया। आरटीपीएस की समीक्षा के दौरान डीएम ने आरटीपीएस के लंबित आवेदनों संबंधित पदाधिकारी को फटकार लगाते हुए आवेदनों का निष्पादन निर्धारित अवधि के अंदर करने को कहा। सभी नीलाम पत्र पदाधिकारियों को नीलाम पत्र वादों का निष्पादन करने के लिए नियमित रूप से सुनवाई करने का निर्देश दिया।

जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में संबंधित पदाधिकारी को जरूरी दिशा निर्देश दिए गए। खनन विकास पदाधिकारी ने अपने विभाग से संबंधित अद्यतन प्रतिवेदन की जानकारी दी। डीएम ने विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप कार्य योजना बनाते हुए कार्य करने एवं नियमित रूप से जांच व छापामारी करने का निर्देश दिया।

बालगृह में तीन घंटे कैद रहे सीडब्लूसी के चेयरमैन, डीएम से की शिकायत

डीएम के आदेश का हवाला देकर अधिकारी ने दिखाया धौंस

केटी न्यूज/बक्सर

बालगृह बक्सर में तीन घंटे तक बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष मदन सिंह को जबरन कैद में रखने का मामला प्रकाश में आया है। इस घटना को अंजाम बाल संरक्षण इकाई के सहायक निदेशक विकास कुमार ने दिया है। हालांकि सारी घटना बालगृह में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है। घटना से बाल कल्याण समिति व बाल संरक्षण इकाई का अंर्तकलह उभरकर सामने आ गया है।

जानकारी के अनुसार बालगृह में रहने वाले अनाथ व बेसहारा कुछ बालकों ने समिति के अध्यक्ष मदन सिंह से बालगृह प्रशासन के विरूद्ध शिकायत किया था। शिकायत करने वाले बच्चों का यह भी कहना था कि इस मामले की जानकारी सहायक निदेशक को नहीं दी जाए। क्योंकि वह मामले की लीपापोती कर देते है। पुनः हमलोगों को परेशान किया जाता है। अध्यक्ष ने इस संबंध में जिलाधिकारी को पत्र लिखकर अवगत कराया। डीएम ने इस पत्र को जांच के लिए सहायक निदेशक के पास ही भेज दिया। इस मामले को बिना उनकी जानकारी डीएम के पास जाने सहायक निदेशक खासे नाराज हो गए। वे शुक्रवार की शाम चार बजे आवेश में बालगृह में आए तथा इसके अंदर संचालित होने वाले बाल कल्याण समिति कार्यालय में अध्यक्ष से नोंकझोंक किये। पुष्ट सूत्रों का कहना है कि अधिकारी ने समिति के सदस्यों को बालगृह से बाहर कर कर्मियों की मदद से अध्यक्ष को उनके कार्यालय में ही कैद कर लिया। सहायक निदेशक ने मेन गेट पर ताला जड़ दिया था। किसी तरह तीन घंटे बाद अध्यक्ष उनके कैद से निकल पाए।

वहीं इस घटना की पुष्टि करते हुए अध्यक्ष मदन सिंह ने कहा कि उन्हें जबरन बालगृह कर्मियों की मदद से रोका गया था। उन्होंने बताया कि बालगृह प्रशासन के विरुद्ध डीएम को पत्र भेजा था। वह पत्र किस बुनियाद पर भेजा गया है। अधिकारी उस आधार को जानने के लिए दबाव बना रहे थे। जब मैंने उनसे कहा कि मैने डीएम को वह पत्र दिया है। मैं उन्हीं को या उनके आदेश पर प्रतिनियुक्त अधिकारी को जानकारी दूंगा। यदि सर का आदेश आपके पास है तो आप मुझे दीजिए। उन्होंने कोई आदेश नहीं दिया। बल्कि यही कह रहे थे कि डीएम साहब ने मुझे भेजा है। सहायक निदेशक लगातार साक्ष्य को लेकर दबाव बना रहे थे। अंत में मैंने उन्हें साक्ष्य दिखाया। मदन सिंह ने बताया कि अधिकारी ने शिकायत करने वाले बच्चों से भी बात की। पूछताछ में बच्चे अपनी बात पर अडिग रहे।

एक नजर

दुगार्पूजा में असामाजिक तत्वों से निपटने की रणनीति बनाने में जुटी पुलिस

डुमरांव। दुगार्पूजा में शांति व्यवस्था को लेकर प्रशासन द्वारा चाक-चौबंद इंतजाम किये जायेंगे। मेला के दौरान असामाजिक तत्वों से निपटने की रणनीति बनायी गयी है। शहर सहित आसपास के इलाकों में दंडाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की जायेगी। इसके लिए अनुमंडल प्रशासन रणनीति बना रहा है। शारदीय नवरात्र में डुमरांव के सड़को पर महिला व पुरुष श्रद्धालुओं की चहलकदमी बढ़ जाती है। हर पूजा-पंडालों के समीप पुलिस बल के जवान तैनात किये जायेंगे। प्रशासनिक सूत्रों ने बताया कि विधि-व्यवस्था को लेकर किसी तरह का समझौता नही होगा। कानून व्यवस्था न बिगड़े इसके लिए थानाध्यक्षों को सख्त हिदायत दी गयी है। सभी भीड़-भाड़ वाले इलाके में पुलिस असामाजिक गतिविधियों पर कड़ी नजर रखेगी। पुलिस उन जगहों को चिन्हित कर रही है, जहां दुगार्पूजा मेला के दौरान पूरी रात श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है, जिसमें महिलाओं की संख्या ज्यादातर होती है। ऐसी हालत में पुलिस सबकी सुरक्षा को लेकर मुस्तैदी से खड़ी रहेगी। दुगार्पूजा मेला पर कानून व्यवस्था की निगरानी को लेकर शहर में तीन वॉच टावर बनाने की पहल की गयी है, जिस पर प्रशासनिक अधिकारी कैमरों की नजर से निगरानी रखेंगे। वॉच टावर राज अस्पताल मोड़, राजगढ़ चौक और स्टेट बैंक के समीप तैयार होंगे। इन टावरों पर सीसीटीवी कैमरे भी लगाये जायेंगे, जिसके तहत मनचलों को पकड़ने में पुलिस को सहूलियत मिलेगी। बताया जाता है कि शहर में बन रहे पूजा-पंडालों के आयोजकों को भी सीसीटीवी कैमरा लगाने का सुझाव दिया जायेगा। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पूजा के दौरान हर थाना क्षेत्रों में अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की जायेगी। अनुमंडल की पुलिस 24 घंटे गश्ती करेगी। इसके साथ ही हर चौक-चौराहे और सुनसान इलाके में भी पुलिस की नजर बनी रहेगी। विधि-व्यवस्था बिगाड़ने वालों के खिलाफ सख्ती बरती जायेगी।

सिमरी के पूर्व थानाध्यक्ष सुनील निर्झर को इंस्पेक्टर के पद पर मिली प्रोन्नति

बक्सर। सिमरी थाने के पूर्व थानाध्यक्ष सुनील कुमार निर्झर को इंस्पेक्टर के पद पर प्रोन्नति मिली है। इंस्पेक्टर के पद पर प्रोन्नत होने के बाद एसपी मनीष कुमार ने उन्हें अपने हाथों बैच व मेडल पहनाया। बता दें कि इसके पहले भी जिले के कई एसआई को इंस्पेक्टर के पद पर प्रोन्नत किया गया था। वही दूसरे फेज में सुनील निर्झर को प्रोन्नति मिली है। फिलहाल वे पुलिस लाईन में पदस्थापित है। एसपी मनीष कुमार ने उन्हें प्रोन्नत किए जाने की पुष्टि की है।

रघुनाथपुर रेल हादसा... चौथे दिन भी डाउन लाइन से नहीं शुरू हुआ ट्रेन का परिचालन

केटी न्यूज/डुमरांव

बुधवार की रात रघुनाथपुर में नार्थ ईस्ट एक्सप्रेस के बेपटरी होने के बाद से अब तक डाउन लाईन में परिचालन सुचारू नहीं हो सका है। घटना के चौथे दिन शनिवार को सुबह में मात्र एक पैसेंजर ट्रेन गुजरी थी। वही पूरे दिन मरम्मत कार्य चलते रहा। शनिवार को भी पूरे दिन रेलवे के बड़े अधिकारी तथा सैकड़ो कर्मी मरम्मत कार्य में लगे रहे। हालांकि अप लाईन में डायवर्टेड ट्रेनों को छोड़ अन्य ट्रेनों का परिचालन सुचारू रूप से हुआ। डाउन लाईन में परिचालन शुरू नहीं होने से लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। खासकर नवरात्र को लेकर बड़ी संख्या में लोग पटना, बनारस के मंडियों से सामानों की खरीददारी करने जाते है। वही हजारों श्रद्धालु नवरात्र के दौरान विंध्याचल मंदिर में दर्शन पूजन को जाते है। लेकिन डाउन लाईन में परिचालन शुरू नहीं होने से लोगों में मायूसी छाई रही। बता दें कि बुधवार की रात रघुनाथपुर स्टेशन पर नार्थ ईस्ट एक्सप्रेस डिरेल हो गई थी। दुर्घटना में ट्रेन की सभी बोगियां बेपटरी हो गई थी। जबकि दो एसी बोगी पलट गई थी।

सामाजिक कार्यकर्ता व अंबेडकरवादी दीपचंद दास का निधन, शोक की लहर

केटी न्यूज/बक्सर

अनुसूचित जाति जनजाति बोर्ड के अध्यक्ष रहे और शहर में डा. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा को स्थापित करवाने वाले तथा डा. के के मंडल महिला महाविद्यालय की स्थापना में अहम योगदान देने के साथ अध्यक्ष पद पर रहे समाजसेवी अम्बेडकरवादी दीपचंद दास का शनिवार को असामयिक निधन हो गया। उनके निधन से जिले में शोक की लहर दौड़ गई। शव यात्रा में पहुंचे के के मंडल महाविद्यालय के सचिव प्रोफेसर हृदय नारायण सिंह ने कहा कि दीपचंद दास ने बक्सर जिला के दलितों के उत्थान और अम्बेडकर के प्रतिमा स्थापना के लिए काफी संघर्ष किया था। साथ ही महाविद्यालय के विकास के लिए सदैव तत्पर रहा करते थे जिन्हे भुलाया नहीं जा सकता।

रामलीला में लक्ष्मण परशुराम संवाद एवं भक्त नरसी चरित्र का हुआ मंचन

धनुर्भंग के बाद परशुराम व लक्ष्मण के संवाद सुन दंग रह गए श्रोता

केटी न्यूज/बक्सर

21 दिवसीय विजयादशमी महोत्सव के तहत किला मैदान के रामलीला मंच पर चल रहे रामलीला व राशलीला के आठवें दिन वृंदावन कलाकारों ने धनुर्भंग व परशुराम-लक्ष्मण संवाद तथा राशलीला में भक्त नरसी चरित्र का मंचन किया। रामलीला के दौरान धनुर्भंग के बाद परशुराम व लक्ष्मण के बीच तीखे संवाद का कलाकारों ने बड़ा जीवंत मंचन किया। जिसे देख श्रोता दंग रह गए। प्रसंग में दिखाया गया कि जब श्रीराम धनुष का खंडन करते हैं, तब सभागार में परशुराम भी आते हैं। और शिव का धनुष टूटा हुआ देखकर काफी क्रोध करते हैं।

वह सभा कक्ष में बैठे सभी योद्धाओं को ललकारते हैं और धनुष का खंडन करने वाले दोषी को दंड का ऐलान करते हैं। इस बात पर लक्ष्मण और परशुराम के बीच तीखा संवाद होता है। संवाद रोकने के लिए श्री रामचंद्र जी हस्तक्षेप करते हैं और परशुराम जी को अपनी छाती पर अंकित भृगु ऋषि के चरण का चिन्ह दिखाते हैं। तब परशुराम का संदेह दूर हो जाता है और वे प्रभु श्रीराम के चरणों में अपना आयुध समर्पण कर वन में तप को चले जाते हैं।

इधर राजा जनक अपने दूतों को निमंत्रण देकर अयोध्या पुरी भेजते हैं। तब महाराज दशरथ बारात लेकर आते हैं और एक ही मंडप में श्रीराम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न चारों भाइयों का धूमधाम से विवाह होता है। जब बारात लौटकर अयोध्या पुरी आती है तो पूरे अयोध्यावासी मंगल मनाते हैं और माताएं वर वधुओं की आरती उतारती है। उक्त लीला का दर्शन कर रहे दर्शक चारों भाईयों का जयघोष करने लगते है।

कृष्ण लीला में भक्त नरसी लीला का मंचन

दूसरी तरफ दिन में मंचित कृष्ण लीला के दौरान भक्त नरसी लीला का मंचन किया गया। जिसमें दिखाया गया कि भक्त नरसी भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त है। वे हमेशा साधु संतों के साथ सदैव संकीर्तन में लगे रहते थे। भक्त नरसी की भाभी उनके इस भक्ति भाव के चलते बराबर प्रताड़ित करती है। इस कारण नरसी घर छोड़ कर चले जाते हैं और एक शिव मंदिर में जाकर उनके चरणों में गिर जाते हैं। वे शिव की करूण उपासना करते हैं। उनकी उपासना से प्रसन्न होकर भगवान शंकर प्रकट होते हैं। उस समय भक्त नरसी ने भगवान शंकर से श्रीकृष्णजी के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। उनकी इच्छा की पूर्ति के लिए भगवान शंकर ने नरसी को श्रीकृष्ण के दर्शन करवाये। शिव इन्हें गोलोक ले गए जहाँ नरसी भगवान श्रीकृष्ण की रासलीला के दर्शन किए और भगवान का रास देखकर धन्य हो जाते हैं। श्री कृष्ण भक्त नरसी को भक्ति प्रदान करते हैं। उक्त लीला का दर्शन कर श्रद्धालु हर्षित होकर श्रीकृष्ण भगवान का जयघोष करते हैं। उक्त लीला के दौरान पुरा परिसर दर्शकों से खचाखच भरा रहता है।

विश्वामित्र हॉस्पीटल
लेप्रोस्कोपिक एवं जनरल सर्जन
विश्वामित्र हॉस्पीटल गोलम्बर बक्सर में
डा.यूके सिंह व डा. आर के झा के टीम के
द्वारा दूरबीन विधी से प्रोस्टेट, जीबी स्टोन,
किडनी स्टोन, अपेंडिक्स , हर्निया, बच्चेदानी,
बवासीर, पेट में गांठ या ट्यूमर, ब्रेस्ट ट्यूमर
आदि का सफल ऑपरेशन होता है।
डा. राजीव कुमार झा
विश्वामित्र हॉस्पीटल गोलम्बर,बक्सर
मोबाईल नम्बर - 9122950441

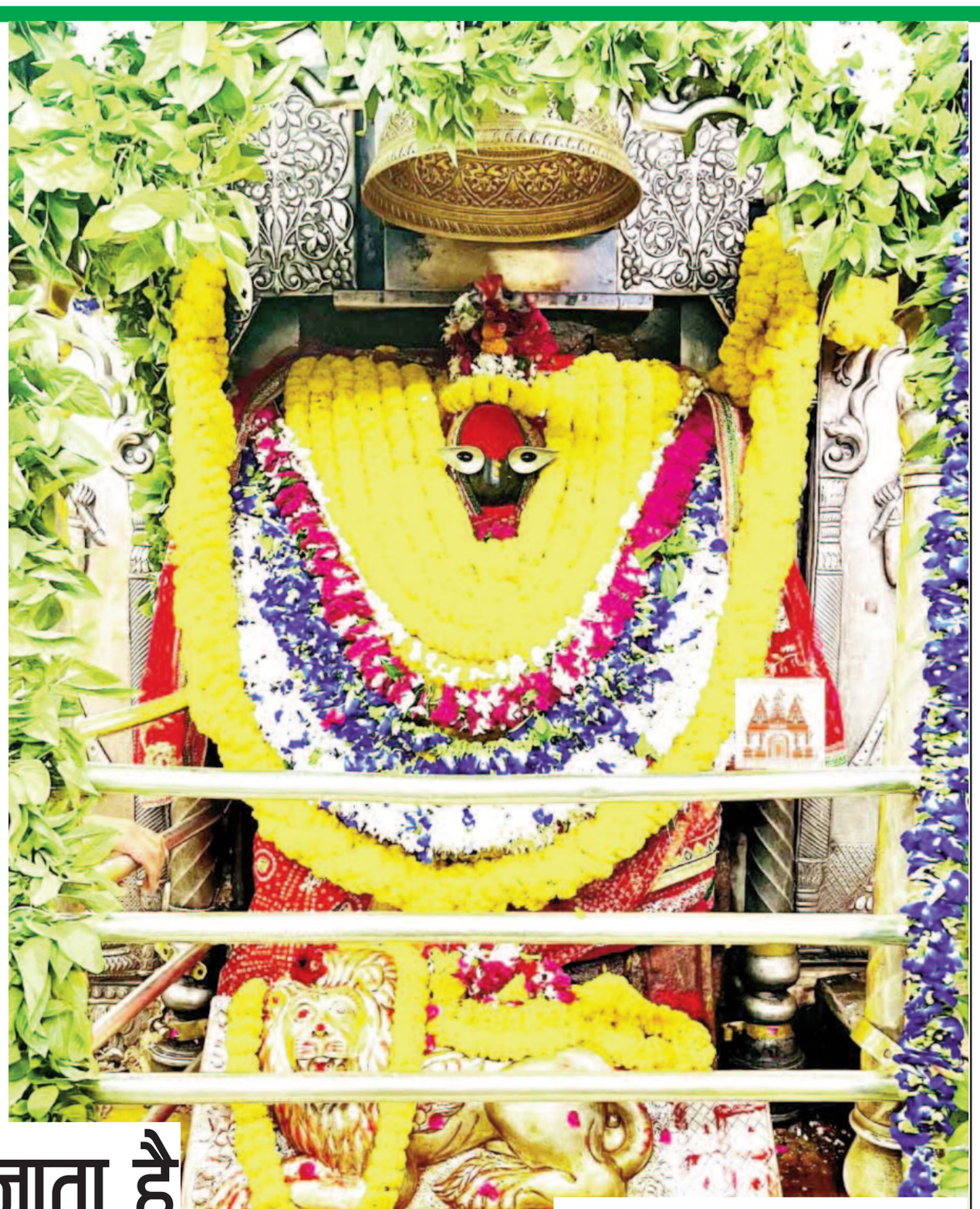

शारदीय नवरात्र मेले के लिए मां भवानी का धाम विविध प्रकार के के फूलों से सज कर तैयार हो चुका है। अलग–अलग प्रकार के देसी विदेशी फूलों से सजे मां के धाम को देखकर बरबस लोगों की नजरें थम जा रही हैं। हांगकांग, इटली व थाईलैंड के अलावा बेंगलुरु, दिल्ली व कोलकाता के फूलों से मंदिर को सजाया गया है। फूलों की खासियत यह है कि यह लगभग पूरे नवरात्र तरोताजा नजर आएंगे। विन्ध्य धाम के अलावा काली खोह, अष्टभुजा मंदिरों को भी विदेशी फूलों से सजाया गया है। हांगकांग से ओरएट, इटली से एंफोरियम और थाईलैंड से हाइड्रोजन के फूल मंगाकर मंदिर में लगाए गए हैं। दिल्ली के गाजीपुर मंडी से जरवारा लोली, कोडीशन, बेंगलुरु का गुलाब और कोलकाता का मेरीगोल्ड फूल भी मंदिर के सजावट में चार चांद लगा रहे हैं। लगभग 50 लाख की लागत से 500 कौड़ी गेंदा का फूल यानी एक कौड़ी में 20 फुल। शामिल होते हैं। 200 पेटी विदेशी फुल हैं जिसमें एक पेटी में लगभग 50 बंडल फूलों का दस्ता है। फूलों को दो ट्रकों पर लाद कर मंगाया गया है। दिल्ली से आए कुल 50 कुशल कारीगर जिनमें 21 बंगाली कलाकार हैं जिन्होंने मिलकर धाम को सजाया है।

मणिद्वीप कहा जाता है विन्ध्याचल धाम

प्रत्येक युग में पूजी जाती रही हैं, त्रिपुर सुन्दरी माता विंध्यवासिनी

विंध्याचल से पवन तिवारी

राज राजेश्वरी मां त्रिपुर सुन्दरी माता विंध्यवासिनी आदि शक्ति है। उनका न कोई आदि है न कोई अंत है मां विंध्यवासिनी की आराधना सभी युगों में होती रही हैं वैसे तो विन्ध्य पर्वत काफी विस्तृत है, किंतु पौराणिक मान्यता के अनुसार गंगोत्री से निकली गंगा अपनी यात्रा में त्रिवेणी संगम के बाद विन्ध्य पर्वत से संगम करती हैं और विन्ध्य धाम में भागीरथी गंगा माँ विन्ध्यवासिनी के इस शक्ति स्थल को स्पर्श करने के लिये चंद्राकार होकर कल कल करती बहती है जिस स्थल पर भागीरथी गंगा विन्ध्य पर्वत का स्पर्श करती है उसे मणिद्वीप कहा जाता है। आध्यात्मिक धर्म गुरु त्रियोगी मिट्ठू मिश्रा महाराज ने कहा कि माँ विंध्यवासिनी माता की आराधना का वर्णन श्रीमद्देवीभागवत के दशम स्कन्ध में मिलता है जिसमें कथा आती है की सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी ने जब सबसे पहले अपने मन से स्वयंभुव मनु और शतरूपा को उत्पन्न किया। तब विवाह करने के उपरान्त स्वयंभुव मनु ने अपने हाथों से देवी की मूर्ति बनाकर सौ वर्षों तक कठोर तप किया। उनकी तपस्या से संतुष्ट होकर भगवती ने उन्हें निष्कण्टक राज्य, वंश-वृद्धि एवं परम पद पाने का आशीर्वाद दिया। वर देने के बाद महादेवी विंध्याचलपर्वत पर चली आई। विंध्य पर्वत पर आने के कारण ही इनका एक नाम विंध्यवासिनी पड़ गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सृष्टि के प्रारंभ से ही विंध्यवासिनी की पूजा होती रही है। सृष्टि का विस्तार माता के ही शुभाशीष से हुआ। इस धाम में आकर भक्त इनकी साधना से अल्प समय में ही सिद्धियों को प्राप्त कर अपनी समस्त मनोकामनाएं को पूर्ण कर लेता है।

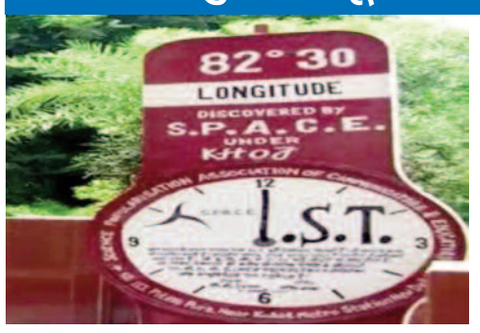

विंध्य धरा से ज्योतिष गणना करता था रावण

लंकाधिपति रावण भी अपनी ज्योतिष गणित की गणना के लिए विंध्याचल की शरण में आता था। तब से अब तक विंध्य धरा का अमरावती चौराहे के पास का स्थल भारत के मानक समय को प्रभावित कर रहा है। यह स्थान भारत की प्रधान मध्याह्न रेखा 82.5 पूर्वी देशांतर पर स्थित है। भारत का मानक समय (इंडियन स्टैंडर्ड टाइम) विंध्याचल से ही लिया जाता है। वर्ष 2007 में भूगोल विदों के एक दल ने यहां पहुंच कर विन्ध्याचल के अमरावती चौराहे के पास स्थित स्थल को मानक समय के स्थल को चिह्नित किया था। सटीक भौगोलिक स्थिति के खोजकर्ता एसपीएसीई (साइज पाल्युराइजेशन एसोसिएशन आफ कम्यूनिकेट्स एंड एजूकेशन) हैं। विंध्याचल के आध्यात्मिक धर्म गुरु पं. त्रियोगी मिट्ठू मिश्र बताते हैं कि विंध्य धरा को मां बिंदुवासिनी का दरबार भी कहते हैं। महारानी मां बिंदुवासिनी अपनी संपूर्ण कलाओं के साथ यहां विद्यमान हैं। बिंदु के बिना एक छोटी रेखा भी नहीं खींची जा सकती है और मां बिंदुवासिनी की कृपा के बिना सृष्टि की रचना नहीं हो सकती थी। रावण भी अपनी ज्योतिष गणना के लिए समय यहीं से लिया करता था। यही नहीं रावण ने यहां मां के मंदिर के समीप शिवलिंग की स्थापना की थी, जिसे बिंदेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है, जो आध्यात्मिक जगत के मानक समय का सूचक भी है।

मानक समय के पास खड़ा होना रोमांच से कम नहीं मिजार्पुर में बहुत से ऐसे स्थान हैं जिसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पुराणों में भी जिक्र है। इसमें मानक समय केंद्र भी है। जहां से भारत का समय निर्धारित होता है।

सप्तऋषियों को ज्ञान प्रदान करने वाला है विंध्याचल का सप्तसागर कुण्ड

विंध्याचल का सप्तसागर कुण्ड जिसे सप्तऋषि कुण्ड भी कहते है। यह कुण्ड हमारे आध्यात्मिक संदेहों का समाधान करता है और हमारे आत्मज्ञान के महत्व को प्रगट करता है। शेर कोठी निवासी आध्यात्मिक धर्म गुरु त्रियोगी मिट्ठू मिश्र ने बताया कि जब भगवान शंकर से नारायण विष्णु ने विंध्याचल के सप्तऋषि कुंड के बारे में यह कहते सुना कि सप्तर्षि कुण्ड मतुलं कृतं स्तर्षिभिः पुरा । सप्तषयः पुरासिद्धिं गताः क्षेत्रे ।। यह अतुल कुण्ड सप्तर्षियों द्वारा स्थापित किया गया है। इस महान क्षेत्र में सप्तऋषियों ने ही सर्वप्रथम सिद्धि प्राप्त किया था। तो इस पर भगवान हरी विष्णु ने भगवान शंकर से कहा । हे भगवान गिरिजानाथ! आप बताएं सप्तऋषि विंध्याचल क्यों और कैसे आये थे? कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भारद्वाज, ये सप्तर्षि तो मुनि थे, और उनके राग का नाश हो गया था। उनको तो कोई कामना भी नहीं थी, फिर किस कारण से सप्तऋषिगण इस महारम्य तथा परोपकारी विन्ध्यक्षेत्र में आये। इस पर भगवान शंकर जी ने विष्णु जी से कहा। हे नारायण! सप्तऋषिगण ये जानना चाहते थे कि परम अध्यात्म ब्रह्म कौन है? तथा उनका रूप और लक्षण क्या है?

उनका रूप किस प्रकार जाना जा सकता है? इस प्रश्न से सप्तऋषियों के मन में सन्देह हो गया था। इसके लिए सप्तऋषियों में से अत्रि ऋषि भगवान शंकर के कहने परे ब्रह्मा जी से इसका समाधान पूछा अत्री ऋषि ने ब्रह्मा जी से कहा कि हमलोग किस क्षेत्र में जायें जहाँ निरन्तर शान्ति एवं कल्याण मोक्ष और ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति हो। क्योंकि ब्रह्म ज्ञान के विना हम उत्तम कल्याण को प्राप्त ही नहीं कर सकते। इसपरे ब्रह्मा जी ने सप्तऋषियों से कहा, मोक्ष तब तक नहीं प्राप्त हो सकता जब तक कि ज्ञान का उदय न हो जाए। जब हमारा चित्त अन्तर के चित्त के कामना रूपी मल को नाश कर देता है तब पुरुष को मोक्ष देने वाले परम उत्तम ज्ञान की प्राप्ति होती है।

इसलिए यह सब प्राप्ति हेतु आप ऋषि गण परम उत्तम आनन्ददायक उत्तम विन्ध्यक्षेत्र में जाऐ जहां तप करने पर उत्तम ज्ञान की प्राप्ति होती है । ब्रह्मा जी ने कहा कि, हे ऋषिगण मैंने भी विंध्य पर्वत परे विधिवत रूप से कुण्ड बनाकर अति दुष्कर तप किया था तभी नारायण हरि ने प्रसन्न होकरे हमें सृष्टि करने के लिये वरदान दिया और उसी वर के प्रभाव से मैंने इस चराचर जगत की सृष्टि की है। इसलिये आप ऋषिगण भी विंध्याचले जाकर तप करो तब आत्मज्ञान का तुम्हारा सन्देह दूर हो जायेगा। इस प्रकार ब्रह्मा जी के कहने परे सप्तऋषिगण विन्ध्याचल पर्वत पर आए और अपने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर विंध्याचल मंदिर से दक्षिण दिशा की ओर अपने नाम का कुंड निर्माण कर उसी वन में कठोर तप करना प्रारम्भ किया। उन ऋषियों के कठोर तप से भगवान् विष्णु प्रसन्न हो प्रकट हुये और कहा कि तुम लोग वर माँगो – तब सप्तऋषिगण भगवान् का वाक्य सुनकर हर्ष से प्रफुल्लित हो स्तुति करने के बादे ऋषियों ने भगवान् से कहा कि हे नारायण हमलोगों को मोक्ष के साधन का ज्ञान दीजिये ।

जिस दृढ़ ज्ञान से हम लोगों को इस संसार कूप से मुक्ति मिले तथा यह कुण्ड जिसका हमलोगों ने निर्माण किया है वह इसी विंध्याचल पर्वत पर ख्याति प्राप्त करे। हे चतुर्भुज नारायण ! इसमें स्नान करने वाले को भी वही ज्ञान की प्राप्ति हो ऐसा हमें वर दीजिए। ऋषियों के इस प्रकार का वचन सुनकर नारायणे ने उन लोगों को ज्ञान दे दिया। तथा कहा कि अपने तप से तुम ज्ञान-विज्ञान युक्त हो गये तुम लोगों का निर्माण किया हुआ यह सप्तऋषि कुण्ड वर्तमान का सप्तसागर कहा जायेगा और वह इस पृथ्वी पर विख्यात होगा ।और जो भी भक्त इस कुण्ड के जल को स्पर्श कर अपने ऊपर मार्जन करेगो उसमें ज्ञान की धारा प्रवाहित होनें लगेगी। इस प्रकार सप्तऋषियों का ज्ञान दाता विंध्य क्षेत्र एवं सप्तसागर कुण्ड आज भी विख्यात है और उस कुण्ड के समीप सहस्त्रों मुनियों ने यज्ञानुष्ठान करके परमसिद्धि को प्राप्त किया है। त्रियोगी मिट्ठू मिश्र ने कहा की ऋषियों की यह कथा हमें यह सिखाती है कि हम समर्पण और तपस्या से अपने समस्त उद्देश्यों को प्राप्त कर जीवन में सफल हो सकते हैं।

मां के धाम में निखरती है विविध शिवलिंग की आभा

मां के धाम में देवाधिदेव महादेव के मंदिरों की अलग विशेषता है। यहां आने वाले श्रद्धालु बाबा के दर्शन को अपना सौभाग्य मानते हैं। जहां भोले शंकर अनेक रूपों में विद्यमान हैं। विंध्य क्षेत्र के विविध शिवालयों में शिव भक्तों की भारी भीड़ होती है। विंध्य क्षेत्र में विविध शिवालयों का अपना अलग ही महत्व है। मां के धाम स्थित मंदिर से मात्र 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित रामेश्वर महादेव अद्भुत शिवलिंग बाबा के भक्तों को बरबस आकर्षित करता है। इसके पीछे कई पौराणिक मान्यताएं हैं। कहा जाता है कि भगवान श्री राम ने वन गमन के समय राम गया घाट के पास शिव शंकर की उपासना करते करते रामेश्वर मंदिर में शिवलिंग की स्थापना की है। यह विशालकाय शिवलिंग अद्भुत नजर आता है। सावन में इस स्थल पर भक्तों की काफी भीड़ इकट्ठा होती है। मां के पूजन के बाद भक्त महादेव के दर्शन करना नहीं भूलते हैं। वही अष्टभुजा पहाड़ी पर स्थित मोतिया तालाब पर मुक्तेश्वर महादेव के रूप में भोले शंकर विराजमान हैं। मंदिर के ठीक सामने स्थित मोतिया तालाब का अलग ही धार्मिक महत्व है। मोतिया तालाब पर विराजमान शिवलिंग को विंध्य पर्वत का केंद्र बिंदु माना जाता है। इसके साथ ही बूढेनाथ मंदिर, विंध्य महादेव, गंगा तट पर स्थित गगेश्वर महादेव, कंटिटेश्वर महादेव ,दुग्धेश्वरश्वर महादेव की महिमा का बखान करते विंध्य क्षेत्र के वासी नहीं अघाते हैं।

शारदीय नवरात्र : विंध्याचल में रुकेंगी 11 जोड़ी अतिरिक्त ट्रेन

केटी न्यूज/विंध्याचल

शारदीय नवरात्र में उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मंडल की ओर से 11 जोड़ी अतिरिक्त ट्रेनों के रुकने का आदेश जारी कर दिया गया है। ये ट्रेनें 15 से 24 अक्टूबर तक विंध्यांचल स्टेशन कुछ देर तक ठहरेंगी। संघमित्रा एक्सप्रेस 12296/12295 ट्रेन प्रतिदिन नवरात्र मेले के दौरान विन्ध्याचल रेलवे स्टेशन पर खड़ी होगी। इसके अलावा पुरुषोत्तम एक्सप्रेस 12801/12802, पाटलीपुत्र एक्सप्रेस 12142/12341, जोधपुर एक्सप्रेस 12307/12308, जोधपुर एक्सप्रेस 22307/22308 के अलावा सीमांचल एक्सप्रेस 12487/12488, भागलपुर लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस 12335/12336, गुवाहाटी लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस 15946/15945 व गुवाहाटी लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस 15648/15647, ब्रह्मपुत्र मेल 15658/15658 और बनारस एक्सप्रेस 12168/12167 ट्रेन 15 अक्टूबर से रुकने लगेगी। पहले से खड़ी होने वाली ट्रेनें अजीमाबाद एक्सप्रेस, बाम्बे जनता एक्सप्रेस, क्षिप्रा एक्सप्रेस, चंबल एक्सप्रेस (मथुरा) व चंबल एक्सप्रेस (ग्वालियर), पीडीडीयू सूबेदारगंज मेमो पैंसेजर, महानंदा एक्सप्रेस, मूरी, चोपन प्रयागराज, महानगरी, हावड़ा-मुंबई मेले, ताप्ती गंगा वाराणसी/ छपरा, ताप्ती गंगा भागलपुर वाया डीडीयू, महाबोधि, दुर्ग, त्रिवेणी, गोंदिया-बरौनी, मगध एक्सप्रेस हैं ये ट्रेनें पहले की तरह खड़ी होंगी।

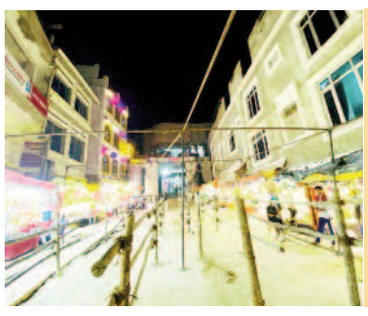

वाराणसी व प्रयागराज से चलेंगी रोडवेज की 195 बसें

शारदीय नवरात्र मेले की व्यवस्था को शानदार बनाने के लिए यूपी रोडवेज ने तैयारी को अंतिम रूप दे दिया है। नवरात्र के पहले दिन से ही विंध्याचल के लिए 195 बसों का संचालन किया जाएगा ?। प्रयागराज रीजन से विंध्याचल के लिए हर रोज 130 व वाराणसी रीजन से 65 बसों का संचालन होगा। इसके साथ ही विंध्याचल रोडवेज बस स्टैंड पर अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती का भी निर्णय लिया गया है ।प्रयागराज रीजन के क्षेत्रीय प्रबंधक एमके त्रिवेदी ने बताया कि मिजार्पुर डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक एसके सेट को मेला अधिकारी नामित किया गया है।

वाहनों के लिए 10 स्टैंड हुए निर्धारित

लगभग हर नवरात्र में दर्शनार्थियों का वाहन खड़ा करने के लिए होने वाली परेशानियों से निजात दिलाने को ध्यान में रखते हुए मिजार्पुर जिला प्रशासन ने नवरात्र मेले में 10 वाहन स्टैंड निर्धारित किये हैं। इन स्टैंड पर वाहनों को खड़ा करने का शुल्क भी निर्धारित कर दिया गया है। स्टैंड पर वाहनों को खड़ा कराने के लिए शुल्क की दर स्टैंड संचालकों को बड़े अक्षरों में बोर्ड पर प्रदर्शित करना होगा। सभी वाहन स्टैंड नवरात्र के प्रथम दिन से सक्रिय हो जाएंगे। मुख्यमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट विंध्य कॉरिडोर को देखने के लिए इस वर्ष नवरात्र में बहुत अधिक संख्या में दर्शनार्थियों को आने की संभावना जताई जा रही है।

अटूट श्रद्धा... सोयाबीन के बीज से तैयार हुई मां दुर्गा की अनोखी प्रतिमा

❐बच्चों की मेहनत का परिणाम मां के प्रति झलक रहा प्रेम

केटी न्यूज/बलिया

नवरात्र शुरू होते ही मां दुर्गा की भक्ति में लोग सराबोर होने लगते हैं। नवरात्रि का दिन माता के लिए खास होता है, इस दिन में माता की पूजा अर्चना की जाती है। तमाम श्रद्धालु मिलकर पंडाल बनाते हैं उसमें एक से बढ़कर एक अनोखी मूर्तियां लाई जाती है।

जो चर्चा का विषय बनती है। आज ऐसे ही एक मूर्ति के बारे में हम बात करेंगे जिसको देख और सुन शायद आप भी हैरान रह जाएंगे। जी हां एक महीने में सोयाबीन के बीज से तैयार हुई यह मां दुर्गा की खास प्रतिमा पूरे जनपद के लिए खास रहेगी। आपको बताते चलें कि 15 सालों से जिले के रसड़ा क्षेत्र में मां दुर्गा की प्रतिमा बनाई जाती है, जो पूरे जिले के लिए खास होती है। पिछले वर्ष लौंग से दुर्गा की प्रतिमा बनाई गई थी। इस बार सोयाबीन के बीज से एक महीने में यह दुर्गा की अनोखी प्रतिमा तैयार हुई है। मूर्ति कलाकार राजकुमार गुप्ता ने बताया कि इस मंदिर पर 15 वर्षों से हम मूर्ति बनाते हैं। हर नवरात्र में यहां की मूर्ति पूरे जनपद के लिए खास होती है। पिछले वर्ष लौंग से बनी थी जो इस वर्ष सोयाबीन के बीज से तैयार हुई है। इस मूर्ति में कहीं न कहीं बच्चों का मां के प्रति प्रेम झलक रहा है।

आकर्षण का केंद्र बनी मां दुर्गा की अनोखी प्रतिमा

जिले के रसड़ा मोहल्ला शिवनगर उत्तर पट्टी में सोयाबीन के बीज से बना मां दुर्गा के प्रतिमा आकर्षण का केंद्र बन गया है। क्योंकि यहां 15 वर्षों से ऐसी ही मूर्ति बनाई जाती है जो लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बन जाती है। राजकुमार गुप्ता ने बताया कि लगभग 40 हजार की लागत से यह मां दुर्गा की अनोखी प्रतिमा बनी है। इसमें छोटे-छोटे बच्चें पढ़ाई करने के बाद जब स्कूल से आते थे तो मां के मूर्ति में पूरे प्रेम और श्रद्धा से मेहनत करते थे। अंतत वही छोटे-छोटे बच्चों (जतन साहनी, सोनू साहनी, मुकेश साहनी और श्रवण साहनी की टीम) ने सोयाबीन के बीज से मां के प्रतिमा को अंतिम रूप प्रदान किया है। कहीं न कहीं इस पूरी मूर्ति में उन छोटे-छोटे बच्चों का प्रेम और श्रद्धा भरा पड़ा है।

15 सालों में इतने प्रकार से बन चुकी है मां की प्रतिमा

15 वर्षों से बनाई जा रही है। मां की प्रतिमा पूरे जिले के लिए ऐसे ही खास नहीं होती। दरअसल इस मूर्ति को बनाने के लिए कारीगर अपनी पूरी कला का प्रदर्शन करते हैं। तब जाकर कहीं न कहीं यहां की मूर्ति पूरे जिले के लिए खास होती है। अब तक यहां पर मटर की दाल, मोती, धूप की लकड़ी, जौं, बटन, राजमा, मक्के, काबुली चना और लौंग इत्यादि से माता की प्रतिमा बनाई गई जो हर समय जिले के लिए खास रही।

रेलवे क्लर्क ने पत्नी को पीटा, मुकदमा दर्ज

बलिया। रेलवे में क्लर्क पद पर तैनात अभिजीत समेत नौ लोगों पर नगरा थाना पुलिस ने दहेज उत्पीड़न और मारपीट का नामजद मुकदमा दर्ज किया है। आरोपी दामाद अभिजीत शर्मा रेलवे में पश्चिम बंगाल के हावड़ा क्षेत्र में लिपिक पद पर तैनात है। जिस पर अपने परिजनों के दबाव में दहेज में और पांच लाख रुपया के लिए अपनी पत्नी को प्रताड़ित करने का आरोप लगा है। मामले को लेकर पीड़ित विवाहिता के पिता रामकुंवर शर्मा ग्राम चंद्रवार दुगौली नगरा निवासी ने अपने समधी अरुण शर्मा, ममता शर्मा, दामाद अभिजीत शर्मा, अश्वनी शर्मा, अशोक शर्मा, संगीता शर्मा, अभिषेक शर्मा, अंशिका शर्मा उर्फ स्वीटी, अंकिता शर्मा उर्फ सिमी सभी ग्राम सराय चावट छतरपुरा थाना नगरा निवासी समेत नौ के खिलाफ मारपीट और दहेज प्रतिषेध अधिनियम 3 एवं 4 के तहत नामजद मुकदमा दर्ज कराया है। रामकुंवर शर्मा ने बताया कि उनकी पुत्री रेखा का विवाह अभिजीत शर्मा पुत्र अरुण शर्मा के साथ 30 जून 2019 को हुआ था। दामाद रेलवे में पश्चिम बंगाल में नौकरी पर तैनात है। जिसके कारण 10 लाख नगद और 5 लाख का गहना व अन्य सामान समेत करीब 17 लाख रुपए का दहेज दिया गया। विवाहिता छ माह तक अपने पति के साथ कोलकत्ता रही।

खबरें फटाफट

छत से गिरकर अधेड़ मजदूर घायल

बलिया। खेजुरी स्थित एक मकान में काम करते समय छत से गिरकर शनिवार की दोपहर एक अधेड़ मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए। आनन—फानन में लोगों ने उन्हें जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां हालत नाजुक बनी हुई है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि गड़वार थाना क्षेत्र के लारपुर निवासी रामप्रवेश राजभर उम्र 50 खेजुरी स्थित एक मकान में काम कर रहा था, तभी अंसतुलित होकर छत से गिर गया। जिससे रामप्रवेश राजभर गंभीर रूप से घायल हो गया। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि रामप्रवेश राजभर मजदूरी का काम करते हैं। शनिवार की सुबह वह? खेजुरी स्थित एक मकान में काम करने गया था, जहां छत पर काम करते समय असंतुलित होकर गिर गया। जिससे गंभीर रूप से घायल हो गया।

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

बलिया। बलिया-फेफना रूट के सागरपाली स्टेशन पर ट्रेन की चपेट में आने से एक अज्ञात युवक की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अंत्य परीक्षण के लिए जिला अस्पताल स्थित पोस्टमार्टम हाउस में भेज दिया है। प्रत्यक्षदर्शियों की मानें तो युवक रेलवे ट्रैक के बगल में कबाड़ी बिन रहा था। इस दौरान ट्रेन के धक्के से मौत हो गई। पुलिस ने युवक की ?शिनाख्त करवाने का प्रयास किया, लेकिन ?शिनाख्त नहीं हो सकी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्मार्टम के लिए भेज दिया है।

दुकान का ताला तोड़ चोरी का प्रयास

रतनपुरा, मऊ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता एवं कस्बा के मिठाई विक्रेता की दुकान का ताला तोड़कर अज्ञात चोरों ने चोरी करने का प्रयास किया, परंतु आसपास के लोगों के भनक के चलते चोरों को भागना पड़ा। बताया जाता है कि रतनपुरा कस्बा के बहुचर्चित नेता चौराहा पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता अजय कुमार मद्धेशिया पुत्र स्वर्गीय अमरनाथ मद्धेशिया की मिठाई की दुकान है। जहां पर रात्रि में चोरों ने धावा बोलकर के उनकी दुकान के शोकेस का ताला तोड़कर चोरी करने की तैयारी कर रहे थे ।

मिशन शक्ति अभियान में बालिकाओं ने किया प्रतिभाग

सिपाह इब्राहिमाबाद (मऊ) प्रदेश सरकार की तरफ से चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत गत दिवस वसुन्धरा कान्वेंट विद्यालय सिपाह ,इब्राहिमाबाद की बालिकाओं ने प्रतिभाग किया । कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए नुक्कड़ नाटक, देशभक्तिपूर्ण गीत और मातृ शक्ति के जयघोष के साथ ही विद्यालयीय बालिकाओं ने प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थिति और महिला पुलिस के सहयोग से मधुवन बाजार स्थित शहीद चौक, थाना गेट और बनियाबान मोड़ पर विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुति के द्वारा जहाँ सरकार के उद्देश्यों को प्रचारित - प्रसारित किया वहीं विद्यालय का मान- सम्मान और गौरव भी बढ़ाया।

मिशन शक्ति का सीएम योगी आदित्यनाथ ने किया औपचारिक शुभारंभ

महिलाओं की सुरक्षा एवं गरिमा बढ़ाने के लिए कार्य करने का किया आह्वान

केटी न्यूज/ मऊ

मिशन शक्ति (फेज 4)के विशेष अभियान का लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा औपचारिक शुभारंभ किया गया।लखनऊ में आयोजित इस कार्यक्रम का सजीव प्रसारण जनपद मुख्यालय स्थित नगर पालिका परिषद के कम्युनिटी हाल में किया गया। इस दौरान विभिन्न स्कूलों के छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं नुक्कड़ नाटकों का प्रस्तुतीकरण भी किया गया। इस मौके पर जिलाधिकारी अरुण कुमार,पुलिस अधीक्षक अविनाश पांडे, विधानसभा क्षेत्र मधुबन से विधायक श्री रामविलास चौहान, भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती नूपुर अग्रवाल सहित समस्त जनपद स्तरीय अधिकारी एवं बड़ी संख्या में महिलाएं तथा स्कूल/कॉलेज में अध्यनरत छात्राएं एवं महिला पुलिसकर्मी उपस्थित रही। इसके अलावा जनपद के समस्त तहसील मुख्यालयों से बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के संचालित स्कूलों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु जागरूकता रैलियां/झांकियां भी निकाली गई। बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के समस्त विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों द्वारा भी महिला सुरक्षा एवं सशक्तिकरण से संबंधित जागरूकता रेलियो का स्थानीय स्तर पर आयोजन किया गया। जनपद मुख्यालय के अलावा तहसील स्तर पर भी विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं नुक्कड़ नाटकों का प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रत्येक तहसील के विकास खंडों में भी इस तरह के आयोजन किए गए।

जनपद मुख्यालय स्थित सोनी धापा इंटर कॉलेज से महिला सशक्तिकरण हेतु जागरूकता रैली को मुख्य विकास अधिकारी श्री प्रशांत नागर एवं पुलिस अधीक्षक श्री अविनाश पांडे द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।यह जागरूकता रैली आजमगढ़ तिराहा, गाजीपुर तिराहा होते हुए नगर पालिका परिषद के कम्युनिटी हाल पर समाप्त हुआ, जहां पर माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा मिशन शक्ति (फेज4) के औपचारिक शुभारंभ कार्यक्रम के सजीव प्रसारण एवं विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में अपने संबोधन के दौरान माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि 2020 में मिशन शक्ति का प्रारंभ हुआ था। करोना काल के दौरान नारी शक्ति के रूप में ग्राम एवम् नगर स्तर पर कार्यरत एएनएम, आशा वर्कर एवं आंगनवाडी कार्यकर्त्रियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया जो नारी शक्ति की प्रतीक है। 2017 में पूरे प्रदेश में लगभग 10 हजार महिला पुलिस कर्मी ही कार्यरत थी, जिनसे सिर्फ कार्यालय में ही लिया जाता था। वर्तमान में महिला पुलिस कर्मियों की लगातार भर्तियों के कारण लगभग 40 हजार महिला पुलिस कर्मी कार्यरत है जो कार्यालय कार्यों के अलावा फील्ड में भी मजबूती के साथ कार्य कर रही है, जिसके कारण महिला अपराधों में काफी मात्रा में गिरावट आई।

जब तक देश की आधी आबादी मजबूत नहीं होगी तब तक देश मजबूत नहीं होगा: जिलाधिकारी

केटी न्यूज/बलिया

जिलाधिकारी रविंद्र कुमार की अध्यक्षता में शनिवार की सुबह कलेक्ट्रेट सभागार में महिलाओं एवं बालिकाओं के सुरक्षा, सम्मान एवं स्वालंबन से संबंधित मिशन शक्ति कार्यक्रम का वर्चुअल संबोधन का लाइव प्रसारण दिखाया गया।

जिलाधिकारी ने विभिन्न क्षेत्रों व विभागों से कार्यक्रम में सम्मिलित हुई महिलाओं और बालिकाओं को नारी शक्ति के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में नारी शक्तियां विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। जैसे खेल, शिक्षा, विज्ञान ,तकनीकी, डिफेंस, सिविल सेवा और राजनीति के अलावा अन्य क्षेत्र में भी। उन्होंने मुख्यमंत्री को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार जिस तरह से महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा के लिए संकल्पित है, उसे हम प्रशासन स्तर से अपने अधिकारियों के माध्यम से सुचारू रूप से सुरक्षा व्यवस्था मुहैया कराने और इसके बेहतर क्रियान्वयन के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। उन्होंने कोविड काल जैसी बिषम परिस्थितियों के दौरान महिला आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों, आशा और एएनएम के कार्यों को विश्व स्तर पर सराहे जाने का जिक्र किया।भाजपा जिला अध्यक्ष संजय यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में हमारा देश और प्रदेश की महिलाएं और बेटियां उन्नति के पद पर अग्रसर है और विभिन्न क्षेत्रों में देश व प्रदेश का नाम रोशन कर रही हैं। शासन- प्रशासन एवं संसद और विधानसभा सहित अन्य क्षेत्रों में इनकी भागीदारी बढ़ रही है। सरकार की मंशा है कि जब तक देश की आधी आबादी मजबूत नहीं होगी, तब तक देश मजबूत नहीं होगा।

सेवामित्र पोर्टल के टोल फ्री नंबर पर करें कॉल

केटी न्यूज/ मऊ

जिला सेवायोजन अधिकारी एम.आर. प्रजापति ने बताया कि सेवायोजन विभाग के सेवामित्र पोर्टल SewÔmitrÔ.up.gov.i»»f के टोल फ्री नम्बर 155330 पर एक कॉल एवं मोबाइल एप के माध्यम से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की दिन प्रतिदिन के काम या घरेलू सेवायें (प्लम्बर, इलेक्ट्रीशियन, वार्ड आया, बढ़ई, ड्राइवर कुक) आदि एवं प्रोजेक्ट वर्क दोनों उचित कीमत पर प्रदान की जा रही है।

जनपद मऊ में ए०सी० रिपेयर सर्विसेस, डॉक्टर ऑन कॉल, इलेक्ट्रीशियन, आईटी एण्ड हार्डवेयर, लान्ड्री सर्विस, मेन पॉवर सर्विसेस, पेन्टर, पेस्ट कन्ट्रोल, प्लम्बर एवं आर०ओ० सर्विस एण्ड रिपेयर सेवायें मोबाईल एप एवं टोल फ्री नम्बर 155330 पर उपलब्ध है। उपरोक्त सेवायें पोर्टल पर ऑनबोर्ड 8 सेवाप्रदाताओं एवं 57 सेवामित्रों के माध्यम से आम नागरिकों एवं शासकीय विभागों के लिए उपलब्ध हैं। बाजार में कार्य की अधिकता / अधिक सेवाये बुक होने पर पोर्टल पर पंजीकृत 4253 कुशल कामगारों में से वांछित सेवामित्रों की सहायता ली जाने की व्यवस्था है। सेवामित्र ऑल इन वन प्लेटफार्म है, जो उपयोगकताओं को लम्बी एवं छोटी अवधि की जरूरतों के लिए बढ़ई, प्लम्बर, इलेक्ट्रीशियन, कुक, ड्राईवर आदि जैसे सेवा पेशेवारों को काम पर रखने में मदद करता हैं। उ0प्र0 सरकार का एक प्रयास जो नागरिकों एवं सेवा पेशेवारों को स्थानीय माँग एवं आपूर्ति के आधार पर सशक्त बनाने की कल्पना करता है।

एसडीएम के आश्वासन पर सभासदों का क्रमिक अनशन समाप्त

चितबड़ागांव। स्थानीय नगरपंचायत परिसर में अधिशासी अधिकारी अनिल कुमार पर करोड़ों रुपये गमन के आरोप की जाँच रिपोर्ट के लिए धरने पर बैठे सभासदों का धरना चौथे दिन उपजिलाधिकारी के प्रतिनिधि के रूप में आए नायब तहसीलदार के आश्वासन पर समाप्त हुआ। नगरपंचायत के दर्जनों सभासद शिवमंगल सिंह के नेतृत्व में अधिशासी अधिकारी अनिल कुमार के द्वारा प्रशासनिक कार्यकाल में करोड़ों की वित्तीय अनियमितता का आरोप लगाते हुए जांच करवाई थी। जांच टीम में अपर जिलाधिकारी सीटी मजिस्ट्रेट व लेखाधिकारी ने जांच भी किया था। धरने के तीसरे दिन देर शाम पहुंचे उपजिलाधिकारी के प्रतिनिधि के रूप में आए नायब तहसीलदार भोला शंकर राय ने सभासदों की दूरभाष के माध्यम से उपजिलाधिकारी सदर वार्ता के बाद आश्वासन के बाद सभासदों ने क्रमिक अनशन समाप्त किया।

चेकिंग के दौरान पुलिस के साथ मुठभेड़ मे दो बदमाश घायल

केटी न्यूज/ मऊ

नगर कोतवाली थाना क्षेत्र के भीटी स्थित ओवर ब्रिज के नीचे बीती रात्रि लगभग ढाई बजे स्वाट टीम, एसओजी और थाना कोपागंज एवं कोतवाली पुलिस के साथ दो बदमाशों की मुठभेड़ हो गई। जिसमें बिहार निवासी दो बदमाश घायल हो गए। दोनों बदमाशों को जिला अस्पताल लाया गया जहां उन्हें उपचार के बाद हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया। नगर कोतवाली क्षेत्र के बलिया मोड़ के पास बीती रात्रि स्वाट टीम कोपागंज थाना प्रभारी प्रमोद कुमार सिंह, एसओजी प्रभारी अमित मिश्रा और नगर कोतवाली थानाध्यक्ष शैलेश सिंह द्वारा संयुक्त रूप से संदिग्ध वाहनों की तलाशी के दौरान बलिया की तरफ से आ रहे दो पहिया वाहन पर सवार पिठ्ठु बैग लेकर दो युवक पुलिस को देखकर भागने लगे। पुलिस द्वारा पीछा करने पर बदमाशों ने पुलिस पर फायरिंग कर दिया। जवाबी कार्रवाई में पुलिस की तीन टीमों द्वारा बदमाशों पर भी फायरिंग की गई जिसमें दोनों बदमाशों के पैर में गोली लग गई। घायल बदमाशों को जिला अस्पताल लाया गया जहां प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया।

नाली और सड़क की समस्या को लेकर ग्रामीणों ने किया ग्राम प्रधान के खिलाफ प्रदर्शन

मऊ । कोपागंज विकासखंड के ग्राम सभा हिलसा कोड़रा के राजभर बस्ती में नाली और सड़क के अभाव में दर्जनो घरों का गंदा पानी नाली न होने के कारण कच्चे रास्ते पर बह रहा है.जिसके चलते ग्रामीणों को अनेक कठनाईओ का सामना करना पड़ता है।गंदगी के चलते आये दिन लोग किसी न किसी रोग के शिकार होते रहते है। जिसको लेकर ग्रामवासियों ने शनिवार की सुबह ग्राम प्रधान के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन करते जल्द से जल्द नाली निर्माण की मांग किया है। सरकार ग्राम सभाओं में योजना चलाकर उसे सुदृढ़ करने पर तुली हुई है।जिससे सभी का जीवन स्तर समाज मे रहने योग्य हो जाय। गवई राजनीति के चलते अधिकांश लोग योजना से वंचित हो जा रहे हैं।इसी तरह का मामला ग्रामसभा हिलसा कोड़रा के राजभर बस्ति में देखने को मिल रहा है ।

जिलाधिकारी ने मुस्तफाबाद में गाटों के ऑनलाइन सर्वे कार्य का किया पर्यवेक्षण

लेखपाल को निलंबित करने के दिए आदेश

केटी न्यूज/ मऊ

जिलाधिकारी अरुण कुमार ने तहसील सदर के राजस्व ग्राम मुस्तफाबाद में गाटों के ऑनलाइन सर्वे कार्य का पर्यवेक्षण किया। इस दौरान संबंधित राजस्व ग्राम के लेखपाल ने बताया कि राजस्व ग्राम मुस्तफाबाद में स्थित कुल 330 गाटों में से अब तक 273 गाटों का ऑनलाइन सर्वे कार्य पूर्ण कर लिया गया है।

जिलाधिकारी ने ऑनलाइन सर्वे पूर्ण हो चुके गाटों का अभी तक कानूनगो एवं नायब तहसीलदार स्तर से सुपरविजन कार्य न होने पर नायब तहसीलदार को कड़ी फटकार लगाते हुए अवशेष समस्त गाटों का स्वयं ऑनलाइन सर्वे कार्य पूर्ण कर तत्काल आख्या प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।इसके अलावा ऑनलाइन सर्वे से संबंधित प्रक्रिया की पूरी जानकारी न होने पर उन्होंने कानूनगो को भी कड़ी फटकार लगाते हुए कानूनगो के खिलाफ प्रतिकूल प्रविष्टि जारी करने के निर्देश दिए। ऑनलाइन सर्वे कार्य का पर्यवेक्षण के दौरान सर्वे हेतु प्रयुक्त होने वाले एग्रीस्टेक ऐप के बारे में जानकारी न होने,संबंधित राजस्व ग्राम के संपूर्ण गाटों का अभी तक सर्वे कार्य पूर्ण न करने तथा योजना से संबंधित सवालों का समुचित उत्तर न देने पर जिलाधिकारी ने लेखपाल वीरेंद्र कुमार को तत्काल निलंबित करने के निर्देश दिए। इस दौरान नायब तहसीलदार सदर, संबंधित राजस्व ग्राम के कानूनगो एवं लेखपाल उपस्थित रहे।

लंबित राजस्व वादों की प्रगति की समीक्षा बैठक

जिलाधिकारी अरुण कुमार की अध्यक्षता में कैंप कार्यालय पर तहसील मधुबन में विभिन्न धाराओं में लंबित राजस्व वादों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। समीक्षा के दौरान उप जिलाधिकारी कोर्ट में धारा 24 के तहत दिनांक 16 सितंबर तक लंबित कुल 358 मामलों के सापेक्ष 127 तथा उप जिलाधिकारी न्यायिक कोर्ट में कुल लंबित 71 वादों के सापेक्ष मात्र 3 मामले निस्तारित हुए। धारा 116 के तहत उप जिलाधिकारी कोर्ट में कुल लंबित 180 वादों के सापेक्ष 46 तथा उप जिलाधिकारी न्यायिक कोर्ट में लंबित 295 वादों के सापेक्ष मात्र 13 मामले निस्तारित हुए हैं।

खबरें फटाफट

कारोबारी शिवशंकर सिंह का निधन

गाजीपुर। जिला पंचायत अध्यक्ष सपना सिंह के ससुर व जिले के प्रतिष्ठित व्यवसाई शिवशंकर सिंह (84) का शनिवार को पूर्वाह्न नौ बजे हृदय गति रुकने से सैदपुर स्थित कौशिक निवास पर उनका निधन हो गया। वह लंबे समय से बीमार चल रहे थे। उधर निधन की खबर से भारतीय जनता पार्टी सहित पूरे जिले में शोक की लहर व्याप्त है।उनकी अंत्येष्टि जौहरगंज स्थित श्मशान घाट पर अपराह्न तीन बजे सम्पन्न हुई। मुखाग्नि पोते आयुष सिंह ने दिया।

समाधान दिवस में एक प्रार्थना पत्र का हुआ निस्तारण

चंदौली। सदर कोतवाली में शनिवार को नायब तहसीलदार चित्रसेन कुमार यादव की देख रेख में समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें फरियादियों द्वारा उनके समक्ष कुल सात प्रार्थना पत्र पड़े। जिसमें से एक प्रार्थना पत्र को मौके से निस्तारण कर अन्य प्रार्थना पत्रों को निस्तारण के लिए विभागीय अधिकारियों को सौंप कर जल्द से जल्द निस्तारण करने का निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि जनता की शिकायतों और समस्याओं के निराकरण को लेकर सरकार एवं शासन गंभीर है। समाधान दिवस में जिन विभागों से संबंधित जनता की शिकायतें दर्ज हो रही हैं। सभी संबंधित अधिकारी गंभीरता के साथ तत्काल कार्यवाही सुनिश्चित करें और मौके पर जाकर शिकायतों का निराकरण सुनिश्चित कराएं। इस दौरान सीओ रामवीर सिंह, कोतवाल राजीव कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

शक्ति दीदी अभियान का कलेक्ट्रेट से शुभारंभ

चंदौली। महिलाओं एवं बालिकाओं को सशक्त बनाने एवं जागरुक करने हेतु शनिवार को कलेक्ट्रेट से हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ किया गया। नारी सुरक्षा, नारी सम्मान व नारी स्वावलंबन के तहत ह्वमिशन शक्ति फेज-04 (शक्ति दीदी अभियान) का जनपद में शुभारंभ हुआ। इस विशेष अभियान (शक्ति दीदी) के तहत थानों में नियुक्त महिला बीट अधिकारियों, समस्त थानों पर गठित महिला सुरक्षा विशेष दल द्वारा गांवों में जन चौपाल लगाकर व बस स्टैंड, बाजार, गांव, कस्बा, स्कूल, कालेज, सार्वजनिक एवं भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर बालिकाओं व महिलाओं से वार्ता कर महिला सुरक्षा सम्बन्धी उपायों के बारे में जागरूक करते हुए शक्ति दीदी के रुप में महिलाओं व बालिकाओं से जुड़कर उन्हे सशक्त बनाने का प्रयास किया जायेगा। शक्ति दीदी अभियान के तहत महिलाओं, बालिकाओं को शासन व यूपी पुलिस द्वारा चलाई जा रही सुरक्षा संबंधित सेवाएं जैसे-विमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एम्बुलेंस सेवा 108 एवं अधिकारियों, सीयूजी नम्बर के बारे में जानकारी दे जागरुक किया जायेगा।

युवाओं के निधन के कारण बिरहा स्थगित

अलीनगर (चंदौली)। क्षेत्र के कोरी गांव स्थित पानी टंकी प्रांगण में बिरहा कमेटी की बैठक रविवार को आयोजित की गई। इसमें गांव सभा के दो युवाओं की आकस्मिक दुर्घटना में मौत पर शोक संवेदना व्यक्त की गई। वहीं 16 को आयोजित बिरहा महोत्सव को स्थगित करने का निर्णय लिया गया। कोरी पानी टंकी प्रांगण में इस वर्ष भी स्व बचऊ यादव की स्मृति में 16 अक्टूबर को बिरहा दंगल का प्रोग्राम आयोजित किया गया था। लेकिन इसको लेकर शनिवार को बिरहा कमेटी की बैठक आयोजित की गई। इसमें गांव के ही दो युवाओं की आकस्मिक दुर्घटना में निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की गई। वहीं कमेटी ने बिरहा महोत्सव को स्थगित करने का निर्णय लिया।

शारदीय नवरात्र... माता के पूजन को लेकर बाजारों में उमड़ी लोगों की भीड़

केटी न्यूज/ चंदौली

शारदीय नवरात्र की तैयारियां पूरी हो गई हैं। त्योहार के मद्देनजर बाजार पूरी तरह सज गए। बाजार में नारियल, चुनरी, सिंदूर, धूप दीप आदि के दुकान सज गए हैं। वहीं देवी मंदिरों पर पूजन अर्चन की शुरूआत हो गई है। मंदिरों पर दिन भर सजावट की गई है। घरों में कलश स्थापित करने के लिए शनिवार को लोगों ने पूजन अर्चन के सामान की नगर में सजी दुकानों से जमकर खरीदारी की गई।

शारदीय नवरात्र को लेकर शनिवार की देर शाम तक श्रद्धालु तैयारी में जुटे रहे। रविवार को कलश स्थापना के बाद नौ दुर्गा की पूजा अर्चना शुरू की जाएगी। जहां दुर्गा मंदिरों में साफ सफाई की जा रही है। वहीं लोगों में पहले दिन व्रत और पूजा को लेकर बेहद उत्साह का माहौल रहा।

मुख्यालय स्थित मां काली माता मंदिर, श्रीराम जानकी शिव मठ मंदिर, महावीर मंदिर में साफ-सफाई होती रही। नवरात्र में मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा पाठ की जाती है। इस दौरान लोग व्रत भी रखते हैं। कलश स्थापना कर विधि विधान से पूजन अर्चन अधिकांश घरों में होती है। इसकी तैयारी पूरी कर ली गई। पूजन सामाग्रियों की खरीददारी के लिए लोग बाजार में दिखे।

इसके चलते पूरे दिन बाजार में चहल-पहल रही। नवरात्र को देखते हुए नगर में जगह-जगह अस्थाई दुकान सजी हुई थी। दूसरी ओर दिन भर मंदिरों में पूजा-पाठ की तैयारियां चलती रही। पंडित कुंज बिहारी मिश्रा और संतोष तिवारी ने बताया कि नवरात्रि का विशेष दिन है जिसके चलते लोग अपने घरों में कलश स्थापना के निमित्त खरीदारी कर रहे हैं।

अभियान में पुलिस ने साव जी पोखरे के समीप दो तस्कर को दबोचा

10 किलो गांजा के साथ तस्कर गिरफ्तार

केटी न्यूज/ चंदौली

पुलिस अधीक्षक डा. अनिल कुमार के निर्देश पर जनपद में अपराध रोकथाम व संदिग्ध व्यक्ति, के लिए चलाए जा रहे अभियान में शनिवार को कोतवाली पुलिस ने नगर के साव जी पोखरे के समीप दो गांजा तस्कर को धर दबोचा और उनको गिरफ्तार कर विभिन्न धाराओं में जेल भेज दिया।

सदर कोतवाल राजीव कुमार सिंह ने बताया कि दो गांजा तस्कर एक मोटरसाइकिल के साथ गांजा सप्लाई करने के लिए बिहार से चंदौली आ रहे थे। जिन्हें मुखबिर की सूचना पर पुलिस द्वारा साव जी पोखरे के समीप गिरफ्तार किया गया। तलाशी के दौरान उनके पास से 10 किलो गांजा बरामद किया गया है। पूछताछ में उन्होंने ने अपना नाम नरेन्द्र राय निवासी ग्राम कुंडारी थाना दुर्गावती जिला कैमूर भभुआ बिहार व राजू तिवारी निवासी ग्राम समहौटा थाना करगहर जिला रोहतास बिहार बताया है। जिन्हें एनडीपीएस एक्ट का मुकदमा पंजीकृत कर कार्यवाही की जा रही है। गिरफ्तार दोनों अभियुक्तों का पूर्व आपराधिक इतिहास के संबंध में जानकारी की जा रही है।

शौचालय निर्माण कर रहे लोगों को पीटा

गाजीपुर। दुल्लहपुर थाना क्षेत्र के कादीपुर गांव में अरुण राम अपने घर के सामने शौचालय का निर्माण कर रहे थे। तभी उनके पट्टीदारों ने मिस्त्री मजदूर को वहां से भगा दिया और रोकने आए अरुण राम , पुष्पा देवी, रिंकू देवी के साथ हाथापाई के बाद थप्पड़ जड़ दिया। जिसमें पुष्पा देवी का मंगलसूत्र भी टूट गया। तत्काल इसकी सूचना दुल्लहपुर थाने पर दी गई। पीड़ित अरुण राम ने बताया कि चार दशक पूर्व घर का बंटवारा अलग-अलग जगह पर हो गया था। आज अपने घर के सामने शौचालय बनवा रहे थे, तभी 500 मीटर की दूरी से आकर पट्टीदार ने घर पर चढ़कर शौचालय का निर्माण रूकवाते ही लात घुसों से पिटाई कर दी और मंगलसूत्र भी छीनकर फरार हो गया। इस मामले में सूचना मिलते ही पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई। दुल्लहपुर थाना अध्यक्ष अशोक कुमार मिश्रा ने बताया कि दोनों पक्षों को थाने बुलाया गया। जिसमें थाना दिवस पर नायब तहसीलदार सत्येंद्र मौर्य ने जब उनका कागजात देखा तो शौचालय का निर्माण खेलकूद के मैदान में किया जा रहा था। जिसमें उन्होंने रोकने का निर्देश दिया तथा लोगों के साथ मारपीट के मामले में अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

दबंगों ने बुजुर्ग दंपति को पीटकर किया लहूलुहान, सिर फोड़ा व दांत तोड़ा

गाजीपुर। भुडकुड़ा थाना क्षेत्र के गोडीहारा गांव में शनिवार को दो दशक पूर्व घर के निर्माण के बाद रमेश गोड (68) ने नाली का निर्माण कराया था। इस नाली में भी पट्टीदार का भी नाबदान का पानी बहता था। नाबदान का कचरा निकाल कर रमेश गोड का रखा सरिया और ईंट पर रखने लगा।जब रमेश ने मना किया तो पट्टीदार आग बबूला हो गए और बुजुर्ग रमेश गोड को धक्का दे दिया। यह दृश्य देखते ही रमेश की बुजुर्ग पत्नी रामदुलारी देवी (62) और बेटा सनी कुमार (35) बीच बचाव करने गए, तो आधा दर्जन महिला -पुरुष ने मिलकर लोहे की रॉड और डंडे से पीटकर बुजुर्ग दंपति सहित बेटे को लहूलुहान कर दिए। भुड़कुड़ा थाने पर नामजद तहरीर दी।जिसमें पुलिस ने पहले घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा तथा रमेश गोड़ की दांत टूटने और सर में चोट लगने से सदर अस्पताल रेफर कर दिया।

गाजीपुर मंडल अंडर - 16 का फाइनल क्रिकेट ट्रायल 16 अक्टूबर से

गाजीपुर। डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन गाजीपुर (सबद्ध झ उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन) के अध्यक्ष शाश्वत सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन से प्राप्त सूचना के अनुसार विगत दिनों सम्पन्न हुए इंटरजोन ट्रायल में गाजीपुर मंडल के अंतर्गत गाजीपुर जनपद से 2, बलिया जनपद से 2, आजमगढ़ जनपद से 3 तथा मऊ जनपद से 5 कुल 12 खिलाडियों का अंतिम चरण के ट्रायल मैच लिए चयन किया गया है` चयनित सभी खिलाडियों का फाइनल ट्रायल मैच 16 से 19 अक्तूबर को नोएडा स्थित शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स (ग्रेटर नोएडा स्टेडियम) में होगा` उन्होंने सभी खिलाडियों को निर्देशित किया कि 16 को पआठ बजे तक अपना मूल जन्मतिथि प्रमाण पत्र, पिछली तीन कक्षाओं की स्कूल मार्कशीट और मूल आधार कार्ड के साथ शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स (ग्रेटर नोएडा स्टेडियम), रिक्रिएशनल ग्रीन, सेक्टर - 20 ग्रेटर नोएडा (गेट नंबर 2) पर अपनी रिपोर्टिंग सुनिश्चित करें। मान लीजिए, अगर कोई खिलाड़ी अभी 9वीं कक्षा में पढ़ता है।

पत्रकारों की गिरफ्तारी के खिलाफ चंदौली में निकाला गया जुलूस

केटी न्यूज/ चंदौली

पत्रकारों और मीडिया पर साजिशपूर्ण हमले के खिलाफ भाकपा-माले और इंकलाबी नौजवान सभा ने चहनियां बाजार में जूलूस निकाल कर भगतसिंह चौक पर सभा किया ।

सभा को संबोधित करते हुए इंकलाबी नौजवान सभा के जिला अध्यक्ष अनिल यादव ने कहा कि मोदी सरकार अपने सरकार के खिलाफ विरोध की कोई आवाज नहीं सुनना चाहती है सरकार की भ्रष्टाचार पूर्ण नीतियों के मुख्य धारा की मीडिया न्यूज क्लिक के प्रवीर पुरकायस्थ और उर्मिलेश भाषा सिंह की गिरफ्तारी इसका उदाहरण है जिस प्रकार भीमा कोरेगांव हिंसा के मामले में फर्जी मुकदमे में बुद्धि जीवी पत्रकारों को जेल में बंद कर दिया गया है आज फिर से भीमा कोरेगांव पार्ट दो जिसमें देश की एकता और अखंडता का खतरा दिखाकर पत्रकारों को निशाना बनाया गया है ।सभा और जुलूस में अनिल यादव ,देवप्रकाश कुशवाहा, धर्मेंद्र दरोगा, सीताराम वनवासी, अर्जुन, चंद्रावली ,चंद्रभान मौर्य आदि लोग मौजूद रहे संचालन श्रवण कुशवाहा ने किया।

कारोबारी को दिनदहाड़े जान से मारने का प्रयास

गाजीपुर। सेवराई तहसील अंतर्गत नगर पंचायत दिलदारनगर के वार्ड नंबर चार निवासी मिठाई व्यवसाई चुन्नू लाल प्रजापति पुत्र स्व. शिवदेनी राम ने पुलिस को तहरीर देकर सुरक्षा की गुहार लगाई है। दिए गए तहरीर में आरोप लगाते हुए कहा कि मैं अपने दो पुत्रों के साथ रोज की भांति दुकान खोलकर बैठा हुआ था, तभी अचानक पास में एक अज्ञात व्यक्ति जो कि अपने चेहरे को गमछा से बंधा हुआ था आया और अचानक ही ईंट पत्थर से दुकान पर लगे शीशे के काउंटर को तोड़ने लगा। इस पर व्यापारी द्वारा मना करने पर अचानक वह अज्ञात व्यक्ति कट्टा निकालकर फायर किया, लेकिन संयोगवश कट्टा मिस हो गया। इतने में हल्ला- गुल्ला मचाने पर आस-पास के लोग इकट्ठा हो गए, मौका देखकर हमलावर भागने में सफल हो गया। घटना की सूचना मिलते ही उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के सेवराई तहसील प्रभारी दिनेश अकेला ने व्यापारी के यहां पहुंचकर घटना के बारे में विस्तृत जानकारी ली और थानाध्यक्ष से मुलाकात कर तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कराया गया।

प्रजापति समाज ने भाजपा जिलाध्यक्ष का किया सम्मान

केटी न्यूज/ गाजीपुर

उत्तर प्रदेश प्रजापति कुम्हार संघ द्वारा शनिवार को श्रीराम जानकी मंदिर रौजा पर आयोजित कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष सुनील सिंह को जिलाध्यक्ष बनाए जाने पर स्वागत अभिनन्दन किया गया। उत्तर प्रदेश प्रजापति कुम्हार संघ के जिलाध्यक्ष व भाजपा कार्यालय मंत्री राजन प्रजापति के नेतृत्व में सुनील सिंह को अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह व माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया गया।

इस अवसर पर सुनील सिंह ने कहा कि समाज के सबसे कमजोर और असंगठित वर्गो के कल्याण के लिए भारतीय जनता पार्टी ने सदैव समर्पित रुप से काम किया है।

कहा कि भारतीय जनता पार्टी अकेला ऐसा राजनैतिक दल है, जो समाज के अत्यंत कमजोर वर्ग के लोगों के जीविकोपार्जन के प्रति प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के माध्यम से ध्यान दिया है।

लोकसभा संयोजक व पूर्व जिलाध्यक्ष कृष्णबिहारी राय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में समाज का हर वर्ग सम्मान से जीवन -यापन कर रहा है।

नेगुरा स्थित गुरुकुल स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

विज्ञान प्रदर्शनी में नौनिहालों ने दिखाई क्रियाशिलता

केटी न्यूज/ चंदौली

क्षेत्र के नेगुरा स्थित गुरुकुल स्कूल में शनिवार को विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस दौरान स्कूल में पढ़ने वाले स्कूली बच्चों ने विज्ञान पर आधारित कई मॉडल तैयार किए, जिसे उन्होंने विज्ञान प्रदर्शनी में प्रस्तुत किया और उक्त मॉडल के क्रियाशील के बारे में भी अतिथियों व अभिभावकों को पूरी जानकारी मुहैया कराई। जिसमें वाटर कन्जरवेशन मॉडल को प्रथम चुना गया। इसी तरह एक्सीडेंट प्रीवेंशन रोड सेफ्टी मॉडल द्वितीय व स्मार्ट सिटी विथ स्मार्ट इलेक्ट्रिशिटी माडल तीसरे स्थान पर रही।

इस दौरान स्कूल के प्रबंधक इसरार अहमद खान द्वारा बच्चों को मेडल प्रदान कर उनका हौसला बढ़ाया गया। साथ ही उन्होंने बच्चों को और बेहतर तरीके से तकनीकी जानकारी को बढ़ाने का आह्वान किया। कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए ऐसे आयोजन स्कूल की ओर से समय-समय पर किए जाते हैं, ताकि बच्चों का पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहे और वे सम-सामयिक खोज आदि को जानने के प्रति उनके अंदर उत्सुकता कायम रहे। इसके पूर्व कक्षा-6 से कक्षा-8 तक के बच्चों ने स्पेश स्टल लांच, ह्यूमन बॉडी टीएलएम, प्रिवेशन रोड सेफ्टी, प्लास्टिक वेस्ट मैटेरियल, स्मार्ट सिटी एण्ड स्मार्ट इलेक्ट्रिसिटी, चन्द्रयान-3.0, वाटर कंजर्वेशन, बिना बिजली के वाटर काउंटेन, वर्षा डिक्टेटर, भूकम्प डिक्टेटर, सोलर पावर पम्प आदि मॉडल प्रस्तुत किए गए। बच्चों ने बताया कि उन्होंने मोबाइल व इंटरनेट के जरिए विज्ञान आधारित कई जानकारी एकत्रित किया, जिसके आधार पर उन्होंने अपने-अपने मॉडल को तैयार किया और उसके कार्य करने की विधि को भी विस्तारपूर्वक जाना और समझा। बच्चों द्वारा तैयार किए गए एक-एक मॉडल अपने आप में अलग और अद्भुत था, जिससे अभिभावकों व अतिथियों ने देखा और सराहा। साथ ही उन्हें रेटिंग भी दी, जिनके आधार पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय मॉडल का चयन किया गया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य कृष्णकांत, मधु श्रीवास्तव, खुशबू सिद्दीकी, शमशुद्दीन, परवेज खान, रोशन मौर्य, सुबाष शर्मा, विनोद कुमार, तान्या गुप्ता, सोनी मौर्य आदि उपस्थित रहे।

मारपीट के बाद बसपा नेता ने दोनों पक्षों से की बातचीत

गाजीपुर। दिलदारनगर थाना क्षेत्र के एक गांव में कोचिंग से लौट रही छात्रा से हुई छेड़छाड़ के बाद दो समुदायों के बीच मारपीट व तनाव के मामले में बसपा नेता परवेज खान ने दोनों पक्षों से मुलाकात की एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की।बसपा के जिला उपाध्यक्ष परवेज खान ने छात्रा के गांव पहुंचकर पीड़ित परिवारों से मुलाकात की। कहा कि आप सभी लोग देश के कानून एवं संविधान पर भरोसा करें। निश्चित तौर पर दोषियों को चिन्हित कर पुलिस उन पर कानूनी कार्रवाई करेगी। लेकिन आप सब आपस मे कोई वैमनस्य न रखें। हम सबको आपसी द्वेष मिटाकर एक दूसरे से मिल जुलकर रहने की जरूरत है। उन्होंने सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि मौजूदा सरकार लोगों को धार्मिक रूप से तोड़ते हुए अपनी वोट बैंक की राजनीति कर रही है, सरकार केवल हमें बांटने का कार्य कर रही है।

एक नजर

विदाई समारोह में छलके आंसू

अलीनगर (चंदौली)। अरुण योग एकेडमी दयालपुर के बीएड बैच 2021 के प्रशिक्षुओं की विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इसमें जूनियर वर्ग के छात्र-छात्राओं ने भावभीनी विदाई देने के दौरान सीनियरों के आंसू छलक पड़े। अरुण योग एकेडमी दयालपुर में बीएड प्रशिक्षुओं का विदाई समारोह का आयोजन जूनियर प्रशिक्षुओं द्वारा किया गया।जिसमे रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति के साथ-साथ प्रशिक्षुओं को मिस फेयरवेल,मिस्टर फेयरवेल , टॉपर,एवम मिस स्माइली के पुरस्कारों से महाविद्यालय के प्रबंधक,प्राचार्य व उप-प्राचार्य द्वारा सम्मानित किया गया और प्रशिक्षुओं को खट्टी मीठी यादो के साथ विदा किया गया । इसके मुख्य अतिथि उमेश चन्द्र सिंह,प्रबंधक डा. अरूण कुमार सिंह,प्राचार्य डा. महीप श्रीवास्तव,उप-प्राचार्य डा.प्रमोद कुमार सिंह एवम अध्यापक अध्यापिकाओं सहित छात्र छात्राओं ने विदाई समारोह के इस पल को यादगार बनाया।

महराजगंज में स्कूल कबड्डी लीग में शानदार खेल की बदौलत गाजीपुर बना चैंपियन

गाजीपुर। जनपद के महाराजगंज में चल रहे स?कूल कबड्डी लीग के फाइनल मैच में गाजीपुर ने अनमोल एकेडमी को पराजित कर शिल्ड पर कब्जा कर लिया। इस दौरान फाइनल मुकाबले में दोनों टीमों ने अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन आम तथा अजीत गाजीपुर टीम की हुई।

विजयी खिलाड़ियों को मुख?य अतिथि इंटरनेशनल खिलाड़ी संदीप नरवाल और दीपक हुड्डा ने पुरस?कार वितरित किया। बेस्ट रेडर स्टेट प्लेयर अभिषेक राय को घोषित किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 16 टीमों ने हिस्सा लिया था। पूरे टूनार्मेंट में अच्छा प्रदर्शन करने वाली टीम के खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। फाइनल मुकाबला देखने के लिए ग्राउंड पर खेल प्रेमियों का हुजूम उमड़ पड़ा था।

सुचिता चौबे बनीं मिस फ्रेशर

पीडीडीयू नगर। विक्रम सिंह कन्या महाविद्यालय परिसर में मिस फ्रेशर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का श ुभार म्भ महाविद्यालय की व्यवस्थापिका डा. समृद्धि श्रीवास्तव, प्राचार्या डा. अनिता श्रीवास्तव, बी०ए- विभाग की विभागाध्यक्षा डा. गायत्री सिंह ने माँ सरस्वती व स्व विक्रम सिंह के तैल्य चित्र पर माल्यापर्ण व दीप प्रज्जवलित कर किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सीनियर्स और जूनियर्स छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। मिस फ्रेशर प्रतियोगिता को पांच चरणों में बाँटा गया। जिसमें व्यक्तित्व परिचय, कैटवॉक, हावी विषय गत प्रश्न से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये। इस प्रतियोगिता में बीए, बीएससी०, बीकॉम प्रथम सेमेस्टर के 15 छात्राओं का चयन किया गया। व्यक्तित्व परिचय और रुचिगत प्रश्नों के बाद 13 छात्राओं का चयन किया गया। अगले दो चरणों के बाद 9 छात्राओं का चयन किया गया। अन्तिम चरण में 7 छात्राओं का चयन किया गया। इन 7 छात्राओं से शिक्षकों द्वारा प्रश्न पूछा गया। जिनमें तीन छात्राएँ विजयी हुई।

पिंड दान कर अपने पित्तरों का किया तर्पण

चाह िनाटाा (चंदौली)। पितृ विसर्जन के अवसर बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर हजारों लोगों ने शनिवार को अपने अपने पूर्वजों का विधि विधान से तर्पण किया । ये सिलसिला भोर से ही शुरू हो गया । भीड़ को देखते हुए घाट पर पुलिस फोर्स मौजूद रही । पितृ पक्ष में लगातार 15 दिनों तक लोग घरों में भोजन बनाकर अपने पूर्वजों को निकालने के बाद शनिवार को पितृ विसर्जन के दिन बलुआ स्थित पश्चिम वाहिनीं गंगा तट पर हजारो की संख्या में लोगों ने अपने अपने पूर्वजों को तर्पण किया । घाट पर व बाजारों में नाईयो से मुंडन कराकर गंगा में स्नान के पश्चात घाट पर मौजूद ब्राम्हणों से पिण्ड दान की सामग्री व मिष्ठान से तर्पण किया । घाट पर मौजूद लोगों ने बिधि विधान से ब्राम्हणों द्वारा मंत्रों के साथ तर्पण किया । वही घरों में पकवान बनाकर छतों पर पित्तरों को निकाला गया । घाट पर भीड़ को देखते हुए भारी मात्रा में फोर्स व गंगा सेवा समिति के लोग तैनात रहे ।

न्यायालय निर्माण संगठन समिति के अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री के सचिव को सौंपा पत्रक

चंदौली। न्यायालय निर्माण संघर्ष समिति चंदौली के अध्यक्ष जन्मेजय सिंह एडवोकेट ने जनपद को न्याय दिलाने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय पहुंचकर पत्रक दिया।जहां प्रधानमंत्री के सचिव ने पत्रक प्राप्त किया और आश्वासन दिया कि आपका यह प्रयास व्यर्थ नहीं जाएगा। चंदौली को न्याय दिलाने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय हर संभव प्रयास करेगा और प्रधानमंत्री तक आपकी बात को पहुंचाया जाएगा। इस दौरान न्यायालय निर्माण संघर्ष समिति के अध्यक्ष जन्मेजय सिंह एडवोकेट ने कहा कि अपनी मिट्टी और अपने लोगों के लिए मैं अंतिम सांस तक लड़ता रहूंगा। किसी भी दबाव के आगे नहीं झुकूंगा। मेरे आंदोलन को चंदौली की आवाज को जबरदस्ती दबाने का जो प्रयास किया गया,लेकिन शायद वह भूल गए कि हम शहीदी धरती के लोग हैं। वह समझे कि हम उनकी बातों से डर करके दिल्ली से चले जाएंगे और अपना आंदोलन समाप्त कर लेंगे।हम लोगों का भी प्रण है जब तक चंदौली को इंसाफ नहीं मिलता हम अपनी लड़ाई जारी रखेंगे। हमने भी यह फैसला कर लिया है कि अब अगर चंदौली को आप हिसाब दे नहीं सकते तो चंदौली आपके साथ नहीं रहेगी और हम आपके दबाव के आगे ना झुकेंगे ना रुकेंगे।